लाईफ वर्सिटी

SCG न्यूज

वर्ष- 04
अंक -01
जून 2026
मूल्य - 50

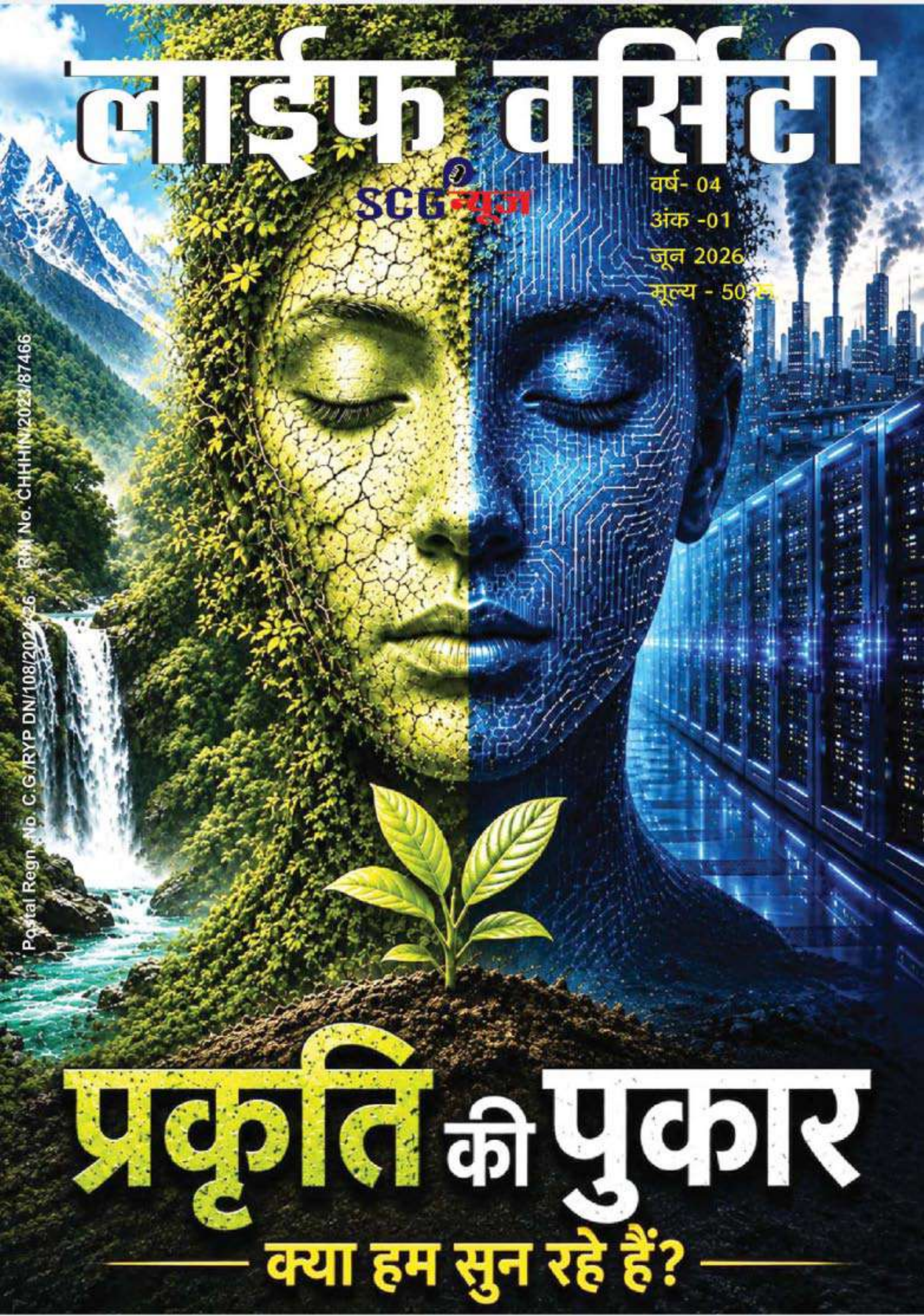

प्रकृति की पुकार

क्या हम सुन रहे हैं?

Postal Regn. No. C.G/RYP DN/108/2024-26, RNI No. CHHHIN/2023/87466

www.phzinfo.com

Positive Health Zone

Integrated Holistic Health Care System

Unique Wellbeing Center

Holistic Healthcare Team

Our INTEGRATED SERVICES

Holistic Path Of Wellness & Wellbeing

MIND BRAIN BODY SOUL
M.B.B.S

1. **Personal Energy Blueprint at Quantum Veda Lab with Latest Quantum Devices-**

   Aura, Chakra, Biofield, Lifeforce Energy Analysis.

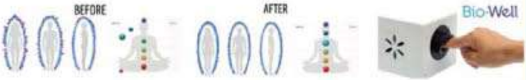

2. **Digital Nadi Parikshan Modern Nadi Veda Pulse -**

   Personality Analysis Body Type, Mind Type, Energy Type.

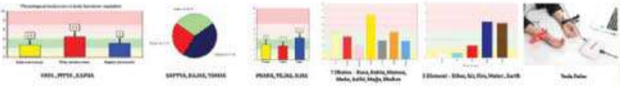

3. **Life Style Clinic**

   Personalised Diet Plan, Lifestyle Plan, Day Plan, Detox Plan as per your Quantum Analysis.

4. **Body Detox & Rejuvenation with Kerala Ayurveda Panchkarma.**

5. **Mind Detox & Stress Management with NLP & Counselling.**

6. **Inner Alingment, Chakra Balancing with PNP Meditation.**

Get In Touch
9109185028, 9109185025

A-41, Amrapali Society,
Near Ganga Diagnostics, Raipur, Chhattisgarh

www.phzinfo.com

सम्पादक
नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

प्रबंधक
हर्षित पाण्डेय

सलाहकार मण्डल

डॉ अनिल गुप्ता	रायपुर
डॉ उदयभान सिंह चौहान	रायपुर
प्रो. डॉ शुभ्रा सान्याल	नई दिल्ली
प्रो तपन मोहन्ति	ओड़िसा

छत्तीसगढ़ कार्यालय
ए-32, आम्रपाली सोसाइटी,
कलर्स मॉल के पीछे, पचपेड़ी नाका
रायपुर (छ.ग.), मो. 88171-94979

विशेष सहयोग

अ.भा. पंचायत परिषद

नितीन गड़करी
संरक्षक

वाल्मिकी प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

वैभव डांगे
राष्ट्रीय महासचिव

डॉ. रूद्रभानु
राष्ट्रीय महासचिव

परिकल्पना- रजनीकांत पाण्डेय

अंदर के पृष्ठों पर

04 12 वर्ष का राष्ट्र तप

9 क्या AI पी जाएंगी इंसानों का पानी ?

6 प्रकृति की पुकार–क्या हम सुन रहे हैं?

18 आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव पंचायती राज

22 सर्वाधिक विकसित बस्तर संभाग

24 'हमारा हक कब मिलेगा ?'

बाल श्रम के अंधेरे में कैद बचपन	11
पर्यावरणीय समृद्धि की ओर....	12
पत्रकारिता और मानसिक स्वास्थ्य पर...	14
गुटबाजी से संगठन तक	16
डिजिटल क्रांति या क्षणिक सनसनी?	18
भारत का असली वित्त मंत्री, मॉनसून	20

SCAN & PAY

UPI ID: 329944413263914@cnrb

लाईफ वर्सिटी के प्रचार–प्रसार में सहयोग करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा बुरहानी प्रिंटर्स, सत्ती बाजार रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979

E-mail : scgnewsraipur@gmail.com | www.scgnews.in

डिजिटल दौर में लोकतंत्र की दस्तक

भारतीय राजनीति इन दिनों कई महत्वपूर्ण घटनाओं के बीच नए संकेत दे रही है। एक ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार अपने 12 वर्षों की उपलब्धियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत कर रही है, वहीं दूसरी ओर देश के विभिन्न हिस्सों में उभरते जनआंदोलन, युवाओं का आक्रोश और विपक्ष की चुनौतियाँ लोकतंत्र के दूसरे पक्ष को सामने ला रही हैं। बिहार के पटालिपुत्र स्टेशन पर छात्रों का उग्र प्रदर्शन, सोशल मीडिया से निकलकर सड़क तक पहुँचा 'कॉकरोच जनता पार्टी' का आंदोलन और पश्चिम बंगाल में कांग्रेस की राजनीतिक स्थिति, इन सबको जोड़कर देखें तो भारतीय राजनीति एक संक्रमणकाल से गुजरती दिखाई देती है।

नरेन्द्र कुमार पाण्डेय
सम्पादक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीते 12 वर्षों में भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। डिजिटल क्रांति, आधारभूत संरचना का विस्तार, वैश्विक मंचों पर भारत की बढ़ती भूमिका और विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएँ इस दौर की प्रमुख उपलब्धियाँ मानी जाती हैं। भाजपा इसे 'विकसित भारत' की दिशा में बढ़ते कदमों का कालखंड बताती है। लेकिन लोकतंत्र केवल उपलब्धियों के उत्सव का नाम नहीं है, बल्कि जनता की अपेक्षाओं और असंतोष को सुनने की व्यवस्था भी है।

हाल ही में बिहार के पाटलिपुत्र स्टेशन पर भर्ती परीक्षा के अभ्यर्थियों द्वारा किया गया प्रदर्शन इसी असंतोष की एक झलक है। हिंसा और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाना किसी भी परिस्थिति में उचित नहीं कहा जा सकता, लेकिन इस घटना ने युवाओं की बेचैनी को अवश्य उजागर किया है। प्रतियोगी परीक्षाओं, रोजगार और अवसरों की अनिश्चितता ने देश के बड़े युवा वर्ग को चिंता में डाल रखा है। जब व्यवस्था उनकी अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरती, तब गुस्सा कभी सोशल मीडिया पर दिखता है और कभी सड़कों पर।

इसी बीच सोशल मीडिया आधारित आंदोलनों का नया दौर भी दिखाई दे रहा है। 'कॉकरोच जनता पार्टी' जैसे अभियान पारंपरिक राजनीति के प्रति बढ़ती निराशा और व्यंग्यात्मक प्रतिरोध की नई संस्कृति का उदाहरण हैं। यह आंदोलन चाहे अभी राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित न हुआ हो, लेकिन यह स्पष्ट करता है कि नई पीढ़ी अपनी बात कहने के लिए नए प्रतीकों और नए माध्यमों का उपयोग कर रही है। लोकतंत्र में ऐसे प्रयोगों को हल्के में नहीं लिया जा सकता, क्योंकि कई बार बड़े राजनीतिक बदलाव छोटे प्रतीकों से ही शुरू होते हैं।

उधर पश्चिम बंगाल की राजनीति भी राष्ट्रीय परिदृश्य को प्रभावित कर रही है। राज्य में तृणमूल कांग्रेस और भाजपा के बीच सीधा मुकाबला दिखाई देता है, जबकि कांग्रेस अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन वापस पाने के लिए संघर्ष कर रही है। कभी बंगाल की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली कांग्रेस आज अस्तित्व और प्रासंगिकता दोनों की चुनौती का सामना कर रही है। भाजपा लगातार अपने संगठन को मजबूत करने में जुटी है, जबकि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपनी क्षेत्रीय पकड़ बनाए रखने का प्रयास कर रही हैं। ऐसे में कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि वह मतदाताओं को अपने पक्ष में कैसे आकर्षित करे।

इन घटनाओं का सामूहिक संदेश यही है कि भारतीय लोकतंत्र जीवंत है और लगातार बदल रहा है। सरकार की उपलब्धियाँ अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं, लेकिन जनता की अपेक्षाएँ भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। युवाओं का आक्रोश, सोशल मीडिया के नए आंदोलन और विपक्ष की चुनौतियाँ यह संकेत देती हैं कि लोकतंत्र में संवाद की आवश्यकता पहले से अधिक है।

सत्ता को आत्मसंतोष से बचना होगा, विपक्ष को आत्ममंथन करना होगा और समाज को लोकतांत्रिक मर्यादाओं के भीतर अपनी आवाज़ उठानी होगी। आखिरकार लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने का नाम नहीं, बल्कि जनता की नब्ज़ को समझने और समय पर उसकी आवाज़ सुनने की कला भी है।

12 वर्ष का राष्ट्र तप

सेवा से सुशासन और संकल्प से विकसित भारत तक

भारतीय परंपरा में बारह वर्ष केवल समय की गणना नहीं है। यह एक तपस्या का काल है। ऐसा काल जिसमें व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र स्वयं को परखता है, अपनी दिशा निर्धारित करता है और अपने भविष्य की नींव रखता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीते 12 वर्षों को यदि इसी दृष्टि से देखा जाए तो यह कालखंड भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में केवल एक राजनीतिक अध्याय नहीं, बल्कि राष्ट्र पुनर्जागरण की एक महत्वपूर्ण यात्रा के रूप में दिखाई देता है। यह यात्रा सत्ता प्राप्ति की नहीं, बल्कि व्यवस्था परिवर्तन की रही है।

नरेन्द्र पाण्डेय

वर्ष 2014 का भारत और वर्ष 2026 का भारत अनेक दृष्टियों से अलग दिखाई देता है। एक समय था जब भारत संभावनाओं का देश कहा जाता था, आज भारत अवसरों का देश बनकर उभरा है। एक समय था जब दुनिया भारत को एक बड़े बाजार के रूप में देखती थी, आज वही दुनिया भारत को वैश्विक नेतृत्व की संभावनाओं वाले राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर रही है। इस परिवर्तन के पीछे केवल योजनाएँ या नीतियाँ नहीं, बल्कि एक स्पष्ट राष्ट्रीय दृष्टि दिखाई देती है।

राजनीति से आगे सेवा का भाव : विष्णुदेव साय

भारतीय राजनीति में लंबे समय तक सत्ता को अधिकार और विशेषाधिकार के रूप में देखा जाता रहा। नरेंद्र मोदी ने इसे सेवा का माध्यम बनाने का प्रयास किया। उन्होंने स्वयं को कई बार 'प्रधान सेवक' कहा। यह केवल राजनीतिक शब्द नहीं था, बल्कि शासन की कार्यशैली में दिखाई देने वाला दृष्टिकोण था।

सरकार की योजनाओं का केंद्र पहली बार वह व्यक्ति बना जो दशकों तक विकास की मुख्यधारा से दूर था। गरीब, किसान, महिला, युवा और वंचित वर्ग केवल चुनावी भाषणों

के विषय नहीं रहे, बल्कि नीति निर्माण के केंद्र में आए। यही कारण है कि जनधन योजना से बैंक खाते खुले, उज्ज्वला योजना से रसोई में धुएँ की जगह गैस पहुँची, आयुष्मान भारत से गरीबों को स्वास्थ्य सुरक्षा मिली और प्रधानमंत्री आवास योजना ने करोड़ों लोगों को पक्के घर का सपना पूरा करने का अवसर दिया। इन योजनाओं का महत्व केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं है। इनका वास्तविक महत्व उस सम्मान और आत्मविश्वास में है जो अंतिम व्यक्ति को मिला।

सुशासन की नई परिभाषाः बृजमोहन अग्रवाल

भारत की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक चुनौती हमेशा प्रशासनिक जटिलता रही है। सरकारी योजनाएँ बनती थीं, लेकिन लाभार्थी तक पहुँचने में वर्षों लग जाते थे। भ्रष्टाचार, बिचौलिया व्यवस्था और अपारदर्शिता ने आम नागरिक का विश्वास कमजोर किया था। पिछले 12 वर्षों में तकनीक को सुशासन का माध्यम बनाया गया। जनधन, आधार और मोबाइल की त्रिमूर्ति ने शासन व्यवस्था को नई पारदर्शिता प्रदान की। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण ने करोड़ों रुपये की बचत करवाई और सरकारी सहायता सीधे लाभार्थियों तक पहुँची।

आज डिजिटल इंडिया केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भारत की प्रशासनिक क्रांति का प्रतीक है। यूपीआई ने दुनिया को दिखाया कि तकनीक का उपयोग किस प्रकार समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया जा सकता है। गाँव का किसान हो या शहर का दुकानदार, डिजिटल भुगतान ने आर्थिक गतिविधियों को नई गति दी है।

आत्मनिर्भर भारत और महिला सशक्तिकरण : डॉ वर्णिका शर्मा

मोदी सरकार की आर्थिक सोच का मूल आधार आत्मनिर्भरता है। इसका अर्थ आत्मकेंद्रित होना नहीं, बल्कि आत्मविश्वासी होना है।

वर्षों तक भारत आयात आधारित अर्थव्यवस्था की चुनौतियों से जूझता रहा। आज स्थिति बदल रही है। 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया', 'स्किल इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' ने उत्पादन, नवाचार और उद्यमिता को नई दिशा दी है। भारत अब केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता बनने की ओर बढ़ रहा है।

स्टार्टअप संस्कृति ने युवाओं को नौकरी तलाशने वाले से नौकरी देने वाले बनने का अवसर दिया है। छोटे शहरों और कस्बों से निकल रहे युवा आज वैश्विक स्तर के समाधान विकसित कर रहे हैं। यह केवल आर्थिक बदलाव नहीं, बल्कि मानसिकता का परिवर्तन है। प्रधानमंत्री मोदी ने कई अवसरों पर कहा है कि भारत का विकास तभी संभव है जब महिलाओं की भागीदारी बढ़े। पिछले वर्षों में महिला सशक्तिकरण को विकास के केंद्र में रखने का प्रयास दिखाई देता है। जनधन खातों में बड़ी संख्या में महिलाओं की भागीदारी, स्वयं सहायता समूहों का विस्तार, 'लखपति दीदी' अभियान, मातृत्व और स्वास्थ्य योजनाएँ तथा महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के प्रयास उल्लेखनीय रहे हैं। आज महिलाएँ केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि विकास प्रक्रिया की सक्रिय भागीदार बन रही हैं। ग्रामीण भारत में स्वयं सहायता समूहों की सफलता इसका उदाहरण है।

आधारभूत संरचनाः विकास की रीढ़ -राजेश मूणत

किसी भी विकसित राष्ट्र की पहचान उसकी आधारभूत संरचना से होती है। बीते 12 वर्षों में सड़क, रेल, जलमार्ग, हवाई परिवहन और डिजिटल कनेक्टिविटी के क्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ है।

वंदे भारत ट्रेनें केवल आधुनिक रेल नहीं हैं, बल्कि नए भारत की गति का प्रतीक हैं। एक्सप्रेसवे, आर्थिक कॉरिडोर, नए हवाई अड्डे और ग्रामीण सड़क नेटवर्क ने विकास को महानगरों से निकालकर गाँवों तक पहुँचाने का कार्य किया है। आज इंफ्रास्ट्रक्चर केवल निर्माण परियोजना नहीं, बल्कि आर्थिक विकास का उत्प्रेरक बन चुका है।

सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जागरण : पुरंदर मिश्रा

भारत केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं, बल्कि एक प्राचीन सभ्यता है। लंबे समय तक विकास और विरासत को एक-दूसरे के विरोधी के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा। मोदी काल में पहली बार दोनों को साथ लेकर चलने का प्रयास दिखाई देता है। अयोध्या में श्रीराम मंदिर, काशी विश्वनाथ धाम, महाकाल लोक, केदारनाथ पुनर्निर्माण और राष्ट्रीय स्मारकों का संरक्षण केवल धार्मिक या सांस्कृतिक परियोजनाएँ नहीं हैं। ये भारतीय समाज के आत्मविश्वास और सांस्कृतिक अस्मिता की पुनर्स्थापना के प्रतीक हैं। जब कोई राष्ट्र अपनी जड़ों से जुड़ता है तभी वह आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर बढ़ सकता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा और निर्णायक नेतृत्व : मोती लाल साहू

राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की सर्वोच्च प्राथमिकता होती है। पिछले 12 वर्षों में भारत ने सुरक्षा के प्रश्न पर अधिक स्पष्ट और दृढ़ दृष्टिकोण अपनाया है।

सीमा सुरक्षा, रक्षा आत्मनिर्भरता, आतंकवाद के प्रति कठोर नीति और सुरक्षा तंत्र के आधुनिकीकरण ने भारत की सामरिक स्थिति को मजबूत किया है। अनुच्छेद 370 का निरसन हो या सीमाओं पर बुनियादी ढाँचे का विकास, अनेक निर्णयों ने यह संकेत दिया कि राष्ट्रीय हित सर्वोपरि है। सुरक्षा केवल सैन्य शक्ति का प्रश्न नहीं है, बल्कि नागरिकों के आत्मविश्वास और राष्ट्र की स्थिरता का भी आधार है।

विश्व मंच पर उभरता भारत : मिर्जा एजाज बेग

आज भारत की विदेश नीति में आत्मविश्वास स्पष्ट दिखाई देता है। भारत अब केवल वैश्विक घटनाओं पर प्रतिक्रिया देने वाला देश नहीं, बल्कि समाधान प्रस्तुत करने वाला राष्ट्र बनकर उभरा है। जी-20 की सफल अध्यक्षता, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बढ़ती भूमिका, वैश्विक संकटों में संतुलित दृष्टिकोण और विकासशील देशों की आवाज बनने का प्रयास भारत की बदलती वैश्विक स्थिति को दर्शाता है। विश्व आज भारत को केवल उसकी जनसंख्या या बाजार के कारण नहीं, बल्कि उसकी स्थिरता, क्षमता और नेतृत्व के कारण महत्व दे रहा है।

विकसित भारत 2047 : राष्ट्र तप की पूर्णाहुति का अगला चरण

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने भारत को केवल वर्तमान के प्रश्नों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि भविष्य का लक्ष्य भी दिया। विकसित भारत 2047 का संकल्प इसी

सोच का परिणाम है। यह लक्ष्य केवल सरकार का कार्यक्रम नहीं है। यह 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक आकांक्षा है। इसमें युवा की ऊर्जा है, किसान का परिश्रम है, महिलाओं की भागीदारी है और समाज के हर वर्ग का योगदान है।

'मोदी नेतृत्व के 12 वर्षों को केवल उपलब्धियों के आँकड़ों से नहीं आँका जा सकता। इनका महत्व उस परिवर्तन में है जिसने शासन को सेवा से, विकास को जनभागीदारी से और राजनीति को राष्ट्र निर्माण के संकल्प से जोड़ा। यदि इन 12 वर्षों को एक वाक्य में परिभाषित करना हो तो कहा जा सकता है कि यह भारत के आत्मविश्वास के पुनर्जागरण का कालखंड है। यह राष्ट्र तप का वह चरण है जिसने भारत को संभावनाओं के देश से संकल्पित राष्ट्र में बदलने की दिशा दी है।'

यात्रा अभी जारी है... लक्ष्य अभी सामने है... लेकिन इतना निश्चित है कि बीते 12 वर्षों ने विकसित भारत की दिशा में एक मजबूत आधारशिला रख दी है जिस पर आने वाला भारत खड़ा होगा।

प्रकृति की पुकार: क्या हम सुन रहे हैं?

भारत की संस्कृति में प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार मानी गई है। वेदों और उपनिषदों से लेकर लोक परंपराओं तक, जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि और आकाश को पंचमहाभूत के रूप में पूजनीय माना गया है। हमारी नदियां माता हैं, पर्वत देवता हैं और वृक्ष जीवनदाता हैं। लेकिन आधुनिक विकास मॉडल ने प्रकृति को साझेदार के बजाय उपभोग की वस्तु मान लिया है। यही सोच आज पर्यावरणीय संकट की जड़ बन चुकी है।

डॉ. नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। सरकारी कार्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों, सामाजिक संगठनों और कॉर्पोरेट संस्थानों द्वारा पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पर्यावरण संरक्षण के संकल्प लिए जाते हैं, जलवायु परिवर्तन पर चिंताएं व्यक्त की जाती हैं और सतत विकास के नारे गूंजते हैं। लेकिन यदि इन आयोजनों की चमक-दमक से बाहर निकलकर वास्तविकता का सामना करें, तो एक असहज सत्य हमारे सामने खड़ा दिखाई देता है—हमारा पर्यावरण लगातार संकट में है और विकास के नाम पर उसका दोहन अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच चुका है।

भारत की संस्कृति में प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार मानी गई है। वेदों और उपनिषदों से लेकर लोक परंपराओं तक, जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि और आकाश को पंचमहाभूत के रूप में पूजनीय माना गया है। हमारी नदियां माता हैं, पर्वत देवता हैं और वृक्ष जीवनदाता हैं। लेकिन आधुनिक विकास मॉडल ने प्रकृति को साझेदार के बजाय उपभोग की वस्तु मान लिया है। यही सोच आज पर्यावरणीय संकट की जड़ बन चुकी है।

पिछले एक दशक में भारत ने आर्थिक विकास, आधारभूत संरचना निर्माण और वैश्विक निवेश के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। एक्सप्रेस-वे बने, रेलवे नेटवर्क का विस्तार हुआ, बंदरगाह विकसित हुए, हवाई अड्डों की संख्या बढ़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में भी बड़े पैमाने पर सड़क, सुरंग तथा बांध निर्माण परियोजनाएं शुरू हुईं। इन उपलब्धियों को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन किसी भी विकास की सफलता केवल उसकी गति से नहीं, बल्कि उसकी स्थिरता और पर्यावरणीय संतुलन से तय होती है।

दुर्भाग्य से पिछले वर्षों में कई ऐसी परियोजनाएं सामने आई हैं जिनमें पर्यावरणीय चेतावनियों और वैज्ञानिक सलाहों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण हिमालयी क्षेत्र है।

साल 2013 की केदारनाथ त्रासदी में हजारों लोगों की जान गई। वर्ष 2021 में ऋषिगंगा क्षेत्र में आई आपदा ने जलविद्युत परियोजनाओं की संवेदनशीलता पर गंभीर प्रश्न खड़े किए।

हिमालय केवल एक पर्वत श्रृंखला नहीं है। यह भारत की जल सुरक्षा, जलवायु संतुलन, जैव विविधता और करोड़ों लोगों की आजीविका का आधार है। गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र और सिंधु जैसी महान नदियों का उद्गम यहीं से होता है। लेकिन आज यही हिमालय मानव हस्तक्षेप के कारण गंभीर दबाव झेल रहा है।

उत्तराखंड की चारधाम सड़क परियोजना विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन की बहस का प्रमुख उदाहरण बन चुकी है। लगभग 900 किलोमीटर लंबे इस परियोजना मार्ग का उद्देश्य चारधामों—बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री—को हर मौसम में जोड़ना है। धार्मिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके निर्माण के दौरान अनेक स्थानों पर पहाड़ों को वैज्ञानिक ढंग से काटने के बजाय सीधे खड़ी कटिंग की गई। परिणामस्वरूप पहाड़ों की प्राकृतिक स्थिरता प्रभावित हुई और भूस्खलन की घटनाओं में वृद्धि देखी गई।

हजारों हेक्टेयर वन क्षेत्र प्रभावित हुआ। लाखों पेड़ों की कटाई ने मिट्टी को बांधने वाली प्राकृतिक व्यवस्था को कमजोर किया। पहाड़ों की जल धारण क्षमता प्रभावित हुई, जलस्रोत सूखने लगे और वर्षा का पानी तेजी से नीचे उतरने लगा। यही कारण है कि फ्लैश फ्लड और अचानक आने वाली आपदाओं की संख्या बढ़ती दिखाई दे रही है।

सुरंग निर्माण और सड़क विस्तार के दौरान निकले मलबे को वैज्ञानिक तरीके से निस्तारित करने के बजाय अनेक स्थानों पर नदियों और घाटियों में फेंका गया। इससे नदियों का तल ऊंचा हुआ, जल प्रवाह बाधित हुआ और बाढ़ का खतरा बढ़ा। प्रकृति के साथ किया गया यह हस्तक्षेप अब बार-बार विनाशकारी घटनाओं के रूप में सामने आ रहा है।

साल 2013 की केदारनाथ त्रासदी में हजारों लोगों की जान गई। वर्ष 2021 में ऋषिगंगा क्षेत्र में आई आपदा ने जलविद्युत परियोजनाओं की संवेदनशीलता पर गंभीर प्रश्न खड़े किए। 2023 की सिल्कयारा सुरंग दुर्घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि भू-वैज्ञानिक अध्ययन, जल निकासी व्यवस्था और पर्यावरणीय जोखिमों की अनदेखी की जाएगी, तो विकास परियोजनाएं स्वयं संकट का कारण बन सकती हैं।

समस्या केवल हिमालय तक सीमित नहीं है। अरावली पर्वतमाला, जो भारत की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है, आज अस्तित्व के संकट से गुजर रही है। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और गुजरात तक फैली अरावली पश्चिमी भारत के लिए प्राकृतिक सुरक्षा कवच का कार्य करती है। यह मरुस्थलीकरण को रोकती है, भूजल पुनर्भरण में सहायता करती है और जैव विविधता का महत्वपूर्ण केंद्र है।

लेकिन अवैध खनन, शहरी विस्तार और कमजोर संरक्षण नीतियों के कारण अरावली का क्षेत्र लगातार सिकुड़ता जा रहा है। इसी पृष्ठभूमि में सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में अरावली की परिभाषा और सीमांकन को लेकर केंद्र सरकार की रिपोर्ट की समीक्षा के लिए उच्च स्तरीय समिति गठित की है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि पर्यावरणीय संरक्षण के प्रश्नों का समाधान केवल प्रशासनिक सुविधा से नहीं, बल्कि वैज्ञानिक तथ्यों और पारिस्थितिक वास्तविकताओं के आधार पर होना चाहिए।

अरावली का मामला यह बताता है कि भारत में पर्यावरणीय नीति को लेकर अभी भी गंभीर पुनर्विचार की आवश्यकता है। यदि किसी पर्वत श्रृंखला को केवल तकनीकी मापदंडों के आधार पर सीमित कर दिया जाता है, तो उसके संरक्षण का उद्देश्य ही समाप्त हो सकता है।

शहरों की स्थिति भी कम चिंताजनक नहीं

है। दिल्ली जहरीली हवा से जूझ रही है। बेंगलुरु जल संकट का सामना कर रहा है। मुंबई और चेन्नई हर वर्ष भारी वर्षा के दौरान जलभराव से प्रभावित होते हैं। इसका कारण केवल मौसम परिवर्तन नहीं, बल्कि हमारी विकास नीति भी है। झीलों, तालाबों, वेटलैंड्स और प्राकृतिक जल निकासी मार्गों को नष्ट कर कंक्रीट का विस्तार किया गया है। परिणामस्वरूप शहरों की प्राकृतिक सहनशीलता समाप्त हो रही है।

पर्यावरणीय संकट का एक बड़ा कारण पर्यावरण प्रभाव आकलन (EIA) प्रक्रिया का कमजोर होना भी है। किसी भी परियोजना का मूल्यांकन केवल उसकी आर्थिक उपयोगिता के आधार पर नहीं होना चाहिए। उसकी पर्यावरणीय लागत, सामाजिक प्रभाव और दीर्घकालिक परिणामों का भी गंभीर अध्ययन आवश्यक है। दुर्भाग्यवश कई बार इन प्रक्रियाओं को औपचारिकता बनाकर छोड़ दिया जाता है।

हालांकि तस्वीर पूरी तरह निराशाजनक भी नहीं है। भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। सौर ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत ने जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर सकारात्मक नेतृत्व प्रदर्शित किया है। लेकिन इन प्रयासों की सफलता तभी सार्थक होगी जब स्थानीय स्तर पर जंगलों, नदियों, पहाड़ों और जैव विविधता की रक्षा को समान प्राथमिकता दी जाए।

अब समय आ गया है कि विकास की परिभाषा बदली जाए। किसी भी परियोजना की सफलता केवल उसकी लागत, लंबाई या आर्थिक लाभ से नहीं मापी जानी चाहिए, बल्कि इस बात से मापी जानी चाहिए कि उसने प्रकृति के साथ कितना संतुलन बनाए रखा। पहाड़ी क्षेत्रों में इको-सेंसिटिव इंफ्रास्ट्रक्चर, रोपवे, सीमित यातायात, कैरींग कैपेसिटी आधारित पर्यटन और स्थानीय समुदायों की भागीदारी जैसे मॉडल अपनाने होंगे।

विश्व पर्यावरण दिवस केवल पौधे लगाने का दिन नहीं, बल्कि विकास की दिशा पर पुनर्विचार करने का अवसर है। हमें यह समझना होगा कि प्रकृति हमारे विकास की विरोधी नहीं, बल्कि सबसे बड़ी सहयोगी है। यदि हम उसके साथ संतुलन बनाकर चलेंगे तो समृद्धि स्थायी होगी। यदि हमने प्रकृति को केवल संसाधन समझकर उसका दोहन जारी रखा, तो विकास की सारी उपलब्धियां आने वाली आपदाओं के सामने बौनी साबित होंगी।

आज पृथ्वी हमें लगातार संकेत दे रही है—बढ़ते तापमान, सूखती नदियां, पिघलते ग्लेशियर, प्रदूषित हवा और बार-बार आने वाली प्राकृतिक आपदाएं। प्रश्न यह नहीं है कि संकट मौजूद है या नहीं। प्रश्न यह है कि क्या हम समय रहते उसे समझने और सुधारने का साहस जुटा पाएंगे।

क्योंकि अंततः पर्यावरण को नष्ट करके किया गया विकास विकास नहीं, बल्कि प्रायोजित विनाश है। और यदि हमने अभी भी दिशा नहीं बदली, तो आने वाली पीढ़ियां हमें एक विकसित भारत के निर्माता के रूप में नहीं, बल्कि एक संकटग्रस्त और पर्यावरणीय रूप से कमजोर भारत छोड़ जाने वाली पीढ़ी के रूप में याद करेंगी।

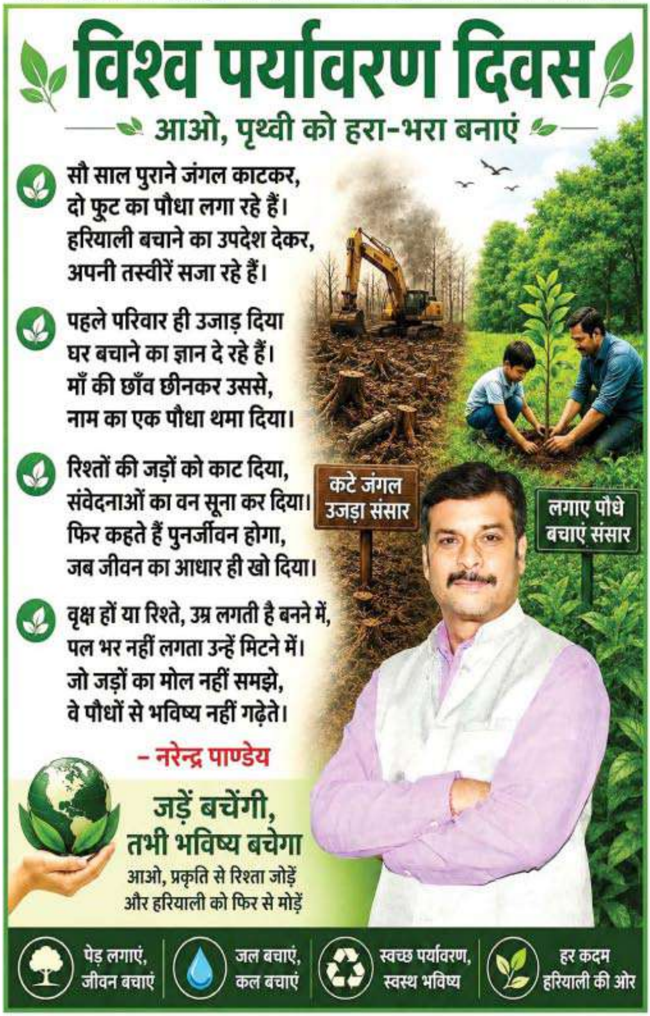

क्या AI पी जाएंगी इंसानों का पानी?

आज AI हमारे मोबाइल फोन से लेकर अस्पतालों, विश्वविद्यालयों, उद्योगों और सरकारी व्यवस्थाओं तक पहुंच चुका है। यह लेख लिखने, चित्र बनाने, वीडियो तैयार करने, बीमारियों का पता लगाने और जटिल समस्याओं का समाधान खोजने में मदद कर रहा है। दुनिया इसे चौथी औद्योगिक क्रांति का आधार मान रही है।

डॉ. नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

मानव इतिहास में कुछ तकनीकें ऐसी होती हैं जो केवल जीवन को आसान नहीं बनातीं, बल्कि सभ्यता की दिशा बदल देती हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) ऐसी ही एक तकनीक है। आज AI हमारे मोबाइल फोन से लेकर अस्पतालों, विश्वविद्यालयों, उद्योगों और सरकारी व्यवस्थाओं तक पहुंच चुका है। यह लेख लिखने, चित्र बनाने, वीडियो तैयार करने, बीमारियों का पता लगाने और जटिल समस्याओं का समाधान खोजने में मदद कर रहा है। दुनिया इसे चौथी औद्योगिक क्रांति का आधार मान रही है।

लेकिन हर क्रांति अपने साथ कुछ प्रश्न भी लेकर आती है। AI के मामले में सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या हम इसकी वास्तविक कीमत को समझ रहे हैं? जिस तकनीक को हम बुद्धिमान भविष्य का प्रतीक मान रहे हैं, क्या वह अनजाने में पृथ्वी के संसाधनों पर असहनीय दबाव नहीं बना रही? आज दुनिया भर में AI को लेकर उत्साह है, लेकिन इसके साथ ही चिंताएं भी तेजी से बढ़ रही हैं। संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की रिपोर्टें संकेत दे रही हैं कि AI का विस्तार केवल तकनीकी मुद्दा नहीं रह गया है, बल्कि यह ऊर्जा, जल, भूमि और पर्यावरणीय संतुलन से जुड़ा वैश्विक प्रश्न बन चुका है।

तकनीकी क्रांति की पर्यावरणीय कीमत

जब हम किसी AI प्लेटफॉर्म पर प्रश्न पूछते हैं, कोई चित्र बनवाते हैं या वीडियो जनरेट करते हैं, तो हमें लगता है कि यह सब कुछ कुछ ही सेकंड में हो गया। लेकिन इन कुछ सेकंडों के पीछे हजारों सर्वरों का विशाल नेटवर्क काम कर रहा होता है। ये सर्वर विशाल डेटा सेंटरों में स्थापित होते हैं, जहां चौबीसों घंटे बिजली की खपत होती है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) का अनुमान है कि वर्ष 2030 तक दुनिया भर के डेटा सेंटर लगभग 945 टेरावॉट-आवर बिजली की खपत कर सकते हैं। यह आंकड़ा इतना बड़ा है कि इसकी तुलना जापान जैसे विकसित देश की वार्षिक बिजली खपत से की जा सकती है। यह केवल बिजली का सवाल नहीं है। यह उस दिशा की ओर संकेत करता है जहां डिजिटल दुनिया धीरे-धीरे ऊर्जा संसाधनों की सबसे बड़ी उपभोक्ता

मशीनों को पानी की प्यास

AI के पर्यावरणीय प्रभाव की चर्चा बिजली तक सीमित नहीं है। इसके पीछे पानी की एक बड़ी कहानी भी छिपी हुई है। AI मॉडल्स को संचालित करने वाले अत्याधुनिक प्रोसेसर अत्यधिक गर्मी उत्पन्न करते हैं। इन सर्वरों को लगातार ठंडा रखने के लिए बड़े पैमाने पर पानी का उपयोग किया जाता है। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार वर्ष 2030 तक AI डेटा सेंटर लगभग 9.3 ट्रिलियन लीटर पानी की खपत कर सकते हैं।

इस आंकड़े को समझने के लिए कल्पना कीजिए कि यह मात्रा लगभग 1.3 अरब लोगों की वार्षिक जल आवश्यकता के बराबर है। एक ओर दुनिया के अनेक हिस्सों में लोग पानी की कमी, सूखे और भूजल संकट से जूझ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर मशीनों को ठंडा रखने के लिए विशाल मात्रा में पानी खर्च किया जा रहा है। यह विरोधाभास आने वाले वर्षों में और गंभीर हो सकता है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां पहले से जल संकट मौजूद है, वहां नए डेटा सेंटरों का विस्तार स्थानीय समुदायों की चिंताओं को बढ़ा रहा है।

बनती जा रही है। पहले बिजली का अधिकांश उपयोग उद्योगों, घरों और परिवहन में होता था। अब उसका बड़ा हिस्सा ऐसी डिजिटल संरचनाओं में खर्च हो रहा है जो दिखाई नहीं देतीं, लेकिन जिनका प्रभाव बहुत व्यापक है।

तकनीक के खिलाफ नहीं, संसाधनों की रक्षा के लिए विरोध

AI के बढ़ते प्रभाव के साथ दुनिया के कई देशों में विरोध की आवाजें भी उठने लगी हैं। विशेष रूप से अमेरिका में अनेक शहरों और समुदायों ने नए डेटा सेंटरों के निर्माण का विरोध किया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इन परियोजनाओं के कारण उनके क्षेत्रों में पानी और बिजली पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है। कई स्थानों पर जनदबाव के कारण अरबों डॉलर की परियोजनाएं रोकनी पड़ीं या उनमें देरी हुई।

यह विरोध तकनीक के खिलाफ नहीं है। यह उस विकास मॉडल के खिलाफ है जिसमें स्थानीय संसाधनों का उपयोग तो होता है, लेकिन उसका लाभ समान रूप से समाज तक नहीं पहुंचता। लोगों की चिंता यह है कि यदि AI कंपनियां प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर उपयोग करेंगी तो उसका सामाजिक और पर्यावरणीय मूल्य कौन चुकाएगा?

AI का उपयोग ही सबसे महंगा

अधिकांश लोग मानते हैं कि AI मॉडल को प्रशिक्षित करने में सबसे अधिक ऊर्जा खर्च होती है। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि वास्तविक खपत मॉडल के रोजमर्रा के उपयोग में होती है। जब करोड़ों लोग प्रतिदिन AI से सवाल पूछते हैं, चित्र बनवाते हैं, वीडियो तैयार करते हैं या अन्य सेवाओं का उपयोग करते हैं, तब सर्वरों पर लगातार दबाव बढ़ता है। ऊर्जा और जल की खपत का बड़ा हिस्सा इसी प्रक्रिया में होता है। अर्थात AI की लोकप्रियता जितनी बढ़ेगी, संसाधनों पर उसका प्रभाव भी उतनी ही तेजी से बढ़ेगा।

भविष्य का सबसे बड़ा प्रश्न

तकनीकी कंपनियां इस चुनौती से अनजान नहीं हैं। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, पुनर्चक्रित जल, ऊर्जा-कुशल चिप्स और नए कूलिंग सिस्टम जैसे समाधान विकसित किए जा रहे हैं। कई कंपनियां अपने डेटा सेंटरों को हरित ऊर्जा से संचालित करने का दावा भी कर रही हैं। फिर भी विशेषज्ञों का मानना है कि केवल तकनीकी समाधान पर्याप्त नहीं होंगे। AI के विस्तार के साथ संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग, पर्यावरणीय नियमन और सामाजिक जवाबदेही को भी समान महत्व देना होगा। यदि विकास और संरक्षण के बीच संतुलन नहीं बनाया गया, तो भविष्य में AIकी उपलब्धियां ही नए संकटों का कारण बन सकती हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव प्रतिभा का अद्भुत उदाहरण है। यह ज्ञान, नवाचार और प्रगति के नए अवसर पैदा कर रहा है। लेकिन यह भी सच है कि कोई भी तकनीक प्रकृति से बड़ी नहीं हो सकती। आज दुनिया एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहां उसे यह तय करना है कि तकनीकी प्रगति और पर्यावरणीय संतुलन के बीच सही रास्ता कौन सा होगा। यदि AI मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए है, तो उसका विकास भी ऐसा होना चाहिए जो पृथ्वी के संसाधनों को सुरक्षित रख सके।

आखिरकार प्रश्न केवल यह नहीं है कि AI कितना बुद्धिमान बनेगा। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या मानव समाज इतना बुद्धिमान साबित होगा कि वह तकनीक और प्रकृति के बीच आवश्यक संतुलन बनाए रख सके।

बाल श्रम के अंधेरे में कैद बचपन : रेस्क्यू से आगे पुनर्वास की चुनौती

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस पर छत्तीसगढ़ में हुई कार्रवाई केवल एक प्रशासनिक अभियान नहीं, बल्कि हमारे समाज के सामने खड़े एक गहरे और असहज सच का उद्घाटन है। रायपुर के उरला औद्योगिक क्षेत्र की एक लोहे की फैक्ट्री से नौ बच्चों का रेस्क्यू, बिलासपुर और रायपुर रेलवे तंत्र के माध्यम से अन्य बच्चों को संरक्षण में लिया जाना यह बताता है कि बाल श्रम आज भी हमारे विकास मॉडल के अंधेरे कोनों में जीवित है।

यह विडंबना ही है कि जिस देश में बच्चों को भविष्य का निर्माता कहा जाता है, वहीं अनेक बच्चे अपने वर्तमान को कारखानों, ढाबों, खदानों और जोखिमपूर्ण कार्यस्थलों में खपा देने को मजबूर हैं। उरला की फैक्ट्री में मिले बच्चे ओडिशा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों से लाए गए थे। यह तथ्य केवल बाल श्रम की समस्या नहीं दर्शाता, बल्कि इसके पीछे सक्रिय अंतरराज्यीय मानव तस्करी और शोषण के संगठित नेटवर्क की ओर भी संकेत करता है।

प्रश्न यह है कि आखिर बच्चे स्कूलों की जगह फैक्ट्रियों तक कैसे पहुंच जाते हैं? इसका उत्तर केवल गरीबी में नहीं, बल्कि उस सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में छिपा है जो बच्चों के अधिकारों की रक्षा करने में लगातार विफल हो रही है। जब परिवारों के पास आजीविका के पर्याप्त साधन नहीं होते, जब शिक्षा की गुणवत्ता कमजोर होती है और जब प्रशासनिक निगरानी ढीली पड़ती है, तब बाल श्रम जैसे अपराधों के लिए जमीन तैयार होती है।

छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा की गई कार्रवाई सराहनीय है। आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा ने जिस संवेदनशीलता के साथ मामले को लिया है, वह यह संदेश देती है कि बच्चों के अधिकार केवल कागजी प्रावधान नहीं, बल्कि संवैधानिक प्रतिबद्धता हैं। किशोर न्याय अधिनियम के तहत कार्रवाई और बाल तस्करी की संभावित जांच यह दर्शाती है कि प्रशासन अब केवल बच्चों को छुड़ाने तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि अपराध की जड़ों तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है। लेकिन रेस्क्यू किसी भी कहानी का अंत नहीं होता। असली चुनौती उसके बाद शुरू होती है। इन बच्चों को सुरक्षित वातावरण, शिक्षा, परामर्श, स्वास्थ्य सुविधाएं और सम्मानजनक पुनर्वास उपलब्ध कराना उतना ही आवश्यक है जितना उन्हें श्रम से मुक्त कराना। यदि पुनर्वास प्रभावी नहीं हुआ तो यही बच्चे दोबारा किसी अन्य शहर या उद्योग में शोषण का शिकार बन सकते हैं।

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस हमें हर वर्ष यह याद दिलाता है कि बच्चों का स्थान कारखानों में नहीं, कक्षाओं में है; मशीनों के बीच नहीं, सपनों के बीच है। विकास की कोई भी परिभाषा तब तक अधूरी है जब तक हर बच्चे को सुरक्षित बचपन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और गरिमापूर्ण जीवन का अवसर उपलब्ध न हो। उरला से रेस्क्यू हुए ये बच्चे केवल आंकड़े नहीं हैं। वे उस व्यवस्था से सवाल हैं जो आधुनिक विकास के दावों के बीच भी बचपन को श्रम और शोषण की भट्टी में झोंकने की अनुमति देती है। समाज, सरकार और नागरिकों की साझा जिम्मेदारी है कि बाल श्रम को केवल कानून का विषय न मानकर मानवता के प्रश्न के रूप में देखा जाए। क्योंकि किसी भी सभ्य समाज की पहचान उसके सबसे कमजोर नागरिकों—उसके बच्चों—की स्थिति से होती है।

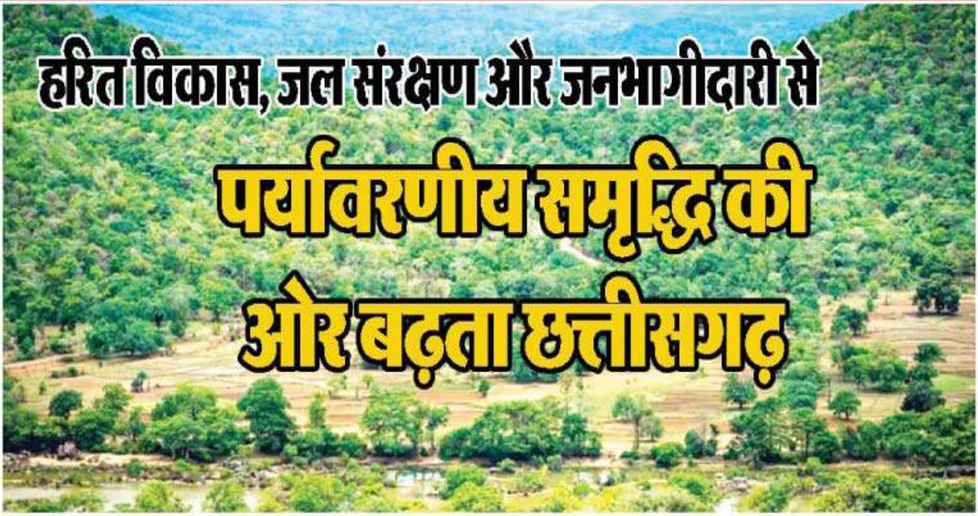

हरित विकास, जल संरक्षण और जनभागीदारी से पर्यावरणीय समृद्धि की ओर बढ़ता छत्तीसगढ़

प्राकृतिक संपदा से समृद्ध छत्तीसगढ़ देश के उन राज्यों में शामिल है, जहां पर्यावरण संरक्षण और विकास के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य के विशाल वन क्षेत्र, समृद्ध जैव विविधता और जल संसाधन इसकी पर्यावरणीय पहचान हैं।

डॉ. दानेश्वरी संभाकर
उपसंचालक, जनसंपर्क

प्रकृति केवल हमारे जीवन का आधार नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और भविष्य की संरक्षक भी है। स्वच्छ वायु, निर्मल जल, घने वन और समृद्ध जैव विविधता किसी भी सभ्य समाज की अमूल्य धरोहर होते हैं। तेजी से बढ़ते शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव के इस दौर में पर्यावरण संरक्षण केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। इसी उद्देश्य से प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है, जो हमें प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों का स्मरण कराता है।

प्राकृतिक संपदा से समृद्ध छत्तीसगढ़ देश के उन राज्यों में शामिल है, जहां पर्यावरण संरक्षण और विकास के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य के विशाल वन क्षेत्र, समृद्ध जैव विविधता और जल संसाधन इसकी पर्यावरणीय पहचान हैं। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार हरित विकास, जल संरक्षण और जनभागीदारी को केंद्र में रखकर अनेक योजनाओं का सफल संचालन कर रही है।

हरियाली से समृद्धि की ओर

छत्तीसगढ़ में वृक्षारोपण को केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि इसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और किसानों की आय से भी जोड़ा गया है। 'हरियाली प्रसार योजना' और 'किसान वृक्ष मित्र योजना' के माध्यम से किसानों को कृषि वानिकी के लिए पौधे उपलब्ध कराए जा रहे हैं तथा उन्हें अपनी भूमि पर वृक्ष लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे एक ओर हरित क्षेत्र का विस्तार हो रहा है तो दूसरी ओर किसानों को दीर्घकालिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो रहा है।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संचालित 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान ने पर्यावरण संरक्षण को जनभावनाओं से जोड़ने का कार्य किया है। इस अभियान के माध्यम से लाखों नागरिक अपनी मां के सम्मान में पौधारोपण कर प्रकृति संरक्षण का संदेश दे रहे हैं। यह पहल पर्यावरणीय जिम्मेदारी को सामाजिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान कर रही है।

शहरों को मिल रही हरित पहचान

तेजी से बढ़ते शहरीकरण के बीच स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। इस दिशा में 'ऑक्सीवन योजना' के

तहत शहरों में ऑक्सीजन पार्क और हरित क्षेत्र विकसित किए जा रहे हैं। वहीं पर्यावरण वानिकी योजना' के माध्यम से सड़क किनारे वृक्षारोपण, पर्यावरण पार्कों का निर्माण तथा सार्वजनिक स्थलों का हरित विकास किया जा रहा है। ये प्रयास न केवल प्रदूषण नियंत्रण में सहायक हैं, बल्कि नागरिकों को बेहतर जीवन गुणवत्ता भी प्रदान कर रहे हैं।

जल संरक्षण बना जनआंदोलन

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को देखते हुए जल संरक्षण आज सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। छत्तीसगढ़ सरकार ने इस दिशा में कई अभिनव पहलें की हैं। 'मोर गांव मोर पानी' और 'मोर गांव मोर तरिया' जैसे अभियान ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण की नई चेतना पैदा कर रहे हैं। परंपरागत तालाबों का पुनर्जीवन, वर्षा जल संचयन, चेक डैम निर्माण और जल पुनर्भरण संरचनाओं के विकास से भूजल स्तर में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं।

राज्य में 'भूजल एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों' के तहत जल स्रोतों के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष बल दिया जा रहा है। जल सुरक्षा की यह सोच आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य की नींव रख रही है।

नदियों और आर्द्रभूमियों का संरक्षण

प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाने के लिए 'नदी तट वृक्षारोपण योजना' के अंतर्गत नदी किनारों पर बड़े पैमाने पर पौधारोपण किया जा रहा है। इससे मिट्टी के कटाव पर नियंत्रण, भूजल संवर्धन और जैव विविधता संरक्षण में मदद मिल रही है।

इसी प्रकार आर्द्र भूमि (वेटलैंड) जलवायु अनुकूलन परियोजना के तहत महानदी जलग्रहण क्षेत्र में आर्द्रभूमियों के संरक्षण और पुनर्जीवन का कार्य किया जा रहा है। यह पहल जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और प्राकृतिक जल तंत्र को सुदृढ़ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

नई पीढ़ी को पर्यावरण का प्रहरी बनाने की पहल

पर्यावरण संरक्षण की सफलता जन-जागरूकता और जनभागीदारी पर निर्भर करती है। इसी उद्देश्य से 'राष्ट्रीय हरित कोर योजना (नेशनल ग्रीन कॉर्प्स)' तथा 'ईको-क्लब कार्यक्रमों' के माध्यम से स्कूलों और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को पर्यावरणीय गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण और जैव विविधता संरक्षण संबंधी कार्यक्रमों के जरिए बच्चों और युवाओं में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जा रही है।

पर्यावरण संरक्षणः सरकार और समाज की साझा जिम्मेदारी

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है। इसके लिए प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। एक पौधा लगाना, जल की बचत करना, प्लास्टिक का कम उपयोग करना, प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना और स्वच्छता बनाए रखना ऐसे छोटे-छोटे कदम हैं जो बड़े परिवर्तन का आधार बन सकते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस हमें यह संदेश देता है कि विकास और पर्यावरण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। छत्तीसगढ़ आज हरियाली, जल संरक्षण और जनभागीदारी आधारित विकास मॉडल के माध्यम से इसी संतुलित दृष्टिकोण को साकार कर रहा है। यदि हम सभी प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों को समझें और पर्यावरण संरक्षण को जीवनशैली का हिस्सा बनाएं, तो आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ, हरित और सुरक्षित पृथ्वी सौंप सकेंगे।

धरती हमें विरासत में नहीं मिली है, बल्कि हमने इसे आने वाली पीढ़ियों से उधार लिया है। इसलिए पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी का नैतिक दायित्व है।

पत्रकारिता और मानसिक स्वास्थ्य पर

पत्रकारिता के 200 वर्ष होने पर लाई

रायपुर। हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक अवसर पर रायपुर स्थित श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल में 'मार्तण्ड गौरव सम्मान एवं पत्रकार संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले पत्रकारों को 'मार्तण्ड गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य विषय 'पत्रकारिता और मानसिक स्वास्थ्य' रहा। इस अवसर पर आयोजित विशेष व्याख्यान एवं विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि डिजिटल युग में 24×7 न्यूज़ कल्चर, ब्रेकिंग न्यूज़ की प्रतिस्पर्धा, सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव और लगातार बढ़ते कार्य-दबाव ने पत्रकारों के मानसिक स्वास्थ्य को एक महत्वपूर्ण विषय बना दिया है।

विशेष वक्ता पॉजिटिव हेल्थ ज़ोन के डॉ. अनिल गुप्ता ने आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और वैदिक विज्ञान के समन्वय (इंटीग्रेशन) की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य में लाइफ फोर्स एनर्जी की भूमिका को विस्तार से समझाया तथा जागरूकता के लिए कुछ अनूठे व्यावहारिक प्रयोगों का प्रदर्शन भी किया, जिन्हें उपस्थित पत्रकारों ने रुचिपूर्वक देखा।

वरिष्ठ पत्रकारों, मीडिया विशेषज्ञों तथा मनोविज्ञान के जानकारों ने पत्रकारों के सामने आने वाले तनाव, भावनात्मक दबाव, कार्य-जीवन संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। प्रतिभागियों ने पत्रकारिता के मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और बदलते मीडिया परिदृश्य पर भी सार्थक चर्चा की।

कार्यक्रम का आयोजन इंटरनेशनल नेचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन (आईएनओ) एवं

र मंथन, पत्रकारों का हुआ सम्मान

ईफ वर्सिटी का आयोजन

पॉजिटिव हेल्थ ज़ोन के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार एवं सामाजिक चिंतक डॉ. नरेन्द्र पाण्डेय ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि 'जिस प्रकार समाज हित में सूचना का अधिकार आवश्यक है, उसी प्रकार पत्रकारों के लिए मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है। स्वस्थ मन और संतुलित सोच ही निष्पक्ष एवं जिम्मेदार पत्रकारिता की आधारशिला है।'

कार्यक्रम के दौरान पत्रकार संवाद, अनुभव साझाकरण तथा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में पत्रकारों एवं मीडिया जगत से जुड़े लोगों ने सहभागिता की। वक्ताओं ने कहा कि स्वस्थ

पत्रकार ही समाज को स्वस्थ, संतुलित और विश्वसनीय सूचना उपलब्ध करा सकता है।

आयोजन समिति की ओर से डॉ. सी.एल. सोनवानी (अध्यक्ष, आईएनओ) एवं डॉ. नरेन्द्र पाण्डेय ने कार्यक्रम में शामिल सभी पत्रकारों, अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने का यह अवसर पत्रकारिता के इतिहास, वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की दिशा पर गंभीर चिंतन का महत्वपूर्ण मंच बना।

कार्यक्रम के अंत में हाल ही में दिवंगत हुए छत्तीसगढ़ योग आयोग के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय रूपनारायण सिन्हा को श्रद्धांजलि दी गई। वक्ताओं ने उनके सामाजिक, योग एवं स्वास्थ्य जागरूकता संबंधी कार्यों को याद करते हुए उन्हें जनसेवा के लिए समर्पित व्यक्तित्व बताया

गुटबाजी से संगठन तक: कांग्रेस के सामने बड़ी चुनौती

भूपेश, सिंहदेव, महंत और बैज–क्या बनेगा जीत का समीकरण?

नरेन्द्र पाण्डेय,

छत्तीसगढ़ की राजनीति में इन दिनों एक सवाल बार-बार उठ रहा है—क्या कांग्रेस 2028 में सत्ता में वापसी कर पाएगी? विधानसभा चुनाव 2023 में अप्रत्याशित हार के बाद कांग्रेस संगठन और नेतृत्व दोनों स्तरों पर आत्ममंथन के दौर से गुजर रही है। पार्टी के भीतर यह समझ बन रही है कि यदि आपसी मतभेदों और गुटीय संघर्षों को समय रहते नहीं रोका गया, तो भाजपा के मजबूत संगठन के सामने वापसी की राह और कठिन हो जाएगी।

कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी चुनौती भाजपा नहीं, बल्कि उसका अपना आंतरिक समीकरण है। भूपेश बघेल, टी.एस. सिंहदेव, चरणदास महंत और दीपक बैज जैसे बड़े नेताओं के बीच सार्वजनिक रूप से भले ही एकता दिखाई दे रही हो, लेकिन राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा लगातार बनी हुई है कि नेतृत्व की महत्वाकांक्षाएं और क्षेत्रीय प्रभाव की राजनीति अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।

> **कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी चुनौती भाजपा नहीं, बल्कि उसका अपना आंतरिक समीकरण है। भूपेश बघेल, टी.एस. सिंहदेव, चरणदास महंत और दीपक बैज जैसे बड़े नेताओं के बीच सार्वजनिक रूप से भले ही एकता दिखाई दे रही हो, लेकिन राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा लगातार बनी हुई है कि नेतृत्व की महत्वाकांक्षाएं और क्षेत्रीय प्रभाव की राजनीति अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।**

हार से सबक लेने की जरूरत

2023 की हार ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल योजनाएं और घोषणाएं चुनाव नहीं जितातीं। कांग्रेस सरकार की कई जनकल्याणकारी योजनाओं के बावजूद जनता ने भाजपा को स्पष्ट बहुमत दिया। इसका सबसे बड़ा कारण सत्ता विरोधी माहौल के साथ-साथ संगठन और सरकार के बीच बढ़ती दूरी भी रही।

राजनीति में जनता केवल विकास नहीं देखती, वह नेतृत्व की एकजुटता और भविष्य की दिशा भी देखती है। कांग्रेस की हार ने यह संदेश दिया कि यदि पार्टी के भीतर समन्वय कमजोर होगा तो उसका असर सीधे मतदाताओं पर पड़ेगा।

दीपक बैज के सामने कठिन परीक्षा

प्रदेश अध्यक्ष के रूप में दीपक बैज की भूमिका आने वाले वर्षों में बेहद महत्वपूर्ण होगी। उन्हें केवल संगठन को सक्रिय नहीं करना है, बल्कि वरिष्ठ नेताओं के बीच

आने वाले दो वर्ष यह तय करेंगे कि कांग्रेस वास्तव में एकजुट हो रही है या फिर गुटबाजी की पुरानी कहानी नए अध्याय के साथ दोहराई जाएगी।

संतुलन भी बनाना है। कांग्रेस की परंपरा रही है कि जब भी गुटबाजी बढ़ी है, संगठन कमजोर हुआ है और उसका लाभ विपक्ष को मिला है।

बैज की सबसे बड़ी उपलब्धि तब मानी जाएगी जब वे कांग्रेस को व्यक्ति आधारित राजनीति से निकालकर कार्यकर्ता आधारित संगठन में बदलने में सफल होंगे। यह कार्य आसान नहीं है, लेकिन सत्ता में वापसी का रास्ता भी इसी से निकलेगा।

टी.एस. सिंहदेव की भूमिका

कांग्रेस के भीतर सिंहदेव आज भी एक स्वीकार्य और संतुलित चेहरा माने जाते हैं। विधानसभा चुनाव से पहले मुख्यमंत्री पद को लेकर जो परिस्थितियां बनीं, उनका असर पार्टी पर पड़ा था। हालांकि वर्तमान में सिंहदेव संगठनात्मक एकता और वैचारिक मजबूती की बात कर रहे हैं।

यदि कांग्रेस नेतृत्व उन्हें समन्वयक की भूमिका में आगे बढ़ाता है, तो वे विभिन्न गुटों के बीच संवाद का सेतु बन सकते हैं। पार्टी को ऐसे नेताओं की आवश्यकता है जो महत्वाकांक्षा से अधिक संगठन को प्राथमिकता दें।

भूपेश बघेल अब भी सबसे बड़े जनाधार वाले नेता

यह भी सच है कि कांग्रेस के पास आज भी सबसे बड़ा जनाधार भूपेश बघेल के रूप में मौजूद है। ग्रामीण क्षेत्रों, किसानों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच उनकी पकड़ मजबूत बनी हुई है। भाजपा लगातार उन्हें राजनीतिक रूप से घेरने का प्रयास कर रही है, लेकिन इससे उनकी राजनीतिक प्रासंगिकता भी स्पष्ट होती है।

कांग्रेस यदि भविष्य की रणनीति बनाती है तो उसे बघेल के जनाधार और संगठन की सामूहिक शक्ति के बीच संतुलन बनाना होगा। केवल एक चेहरे के भरोसे चुनाव जीतना अब संभव नहीं है।

भाजपा की चुनौती

दूसरी ओर भाजपा सत्ता में रहते हुए संगठन को और मजबूत कर रही है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सरकार अभी अपने कार्यकाल के शुरुआती चरण में है और भाजपा केंद्र तथा राज्य दोनों स्तरों की ताकत का लाभ उठा रही है।

कांग्रेस के लिए समस्या यह है कि उसे केवल भाजपा की नीतियों का विरोध नहीं करना, बल्कि जनता के सामने एक विश्वसनीय विकल्प भी प्रस्तुत करना होगा। विपक्ष की राजनीति केवल आरोपों से नहीं, बल्कि वैकल्पिक दृष्टि से मजबूत होती है।

क्या लौटेगा सुनहरा दौर?

राजनीति में स्थायी जीत और स्थायी हार जैसी कोई स्थिति नहीं होती। कांग्रेस के पास अनुभवी नेतृत्व, मजबूत वोट बैंक और संगठनात्मक ढांचा आज भी मौजूद है। लेकिन सत्ता वापसी का रास्ता केवल तब खुलेगा जब पार्टी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठकर सामूहिक नेतृत्व की संस्कृति विकसित करेगी।

छत्तीसगढ़ की जनता ने कांग्रेस को दो बार सत्ता दी है। इसलिए वापसी की संभावना को खारिज नहीं किया जा सकता। लेकिन यह वापसी केवल नारों, बैठकों और फोटो अवसरों से नहीं होगी। इसके लिए जमीन पर संगठन, नेतृत्व में अनुशासन और जनता के मुद्दों पर निरंतर संघर्ष आवश्यक होगा।

आने वाले दो वर्ष यह तय करेंगे कि कांग्रेस वास्तव में एकजुट हो रही है या फिर गुटबाजी की पुरानी कहानी नए अध्याय के साथ दोहराई जाएगी। यदि पार्टी इस परीक्षा में सफल होती है, तो छत्तीसगढ़ की राजनीति में उसका सुनहरा दौर फिर लौट सकता है। अन्यथा सत्ता की राह और लंबी होती जाएगी।

"सवाल उठ न सके इसलिए खामोश हैं लोग।
ज़ुबाँ तो सबके पास है मगर डरे बहुत हैं लोग ॥"

- महल में जश्न का आलम है रोशनी भी बहुत है।
  गली के मोड़ पर लेकिन धुँआ ही धुँआ है ॥
- जो सच की बात करें वो निशाने पर है अब।
  मिज़ाजे वक़्त में झूठ के हुनर बहुत है ॥
- न पूँछ हाल शहर का किताब वालों से।
  यहाँ जख्म गिनोगे तो दास्ताँ बहुत है ॥
- उजड़ गये कई घर, कई चिराग बुझ गये।
  मगर बयान में विकास के किस्से बहुत हैं ॥
- जो ताज और तख़्त के आगे झुके नहीं अबतक।
  उन्हीं के सर पर सितम के निशान बहुत हैं ॥
- किसी ने दर्द लिखा तो गुनहगार हो गया।
  यहाँ तो झूठ के हक में गवाह बहुत हैं ॥
- वो सोचता है की खामोश हो गया है शहर।
  उसे खबर नहीं कि सीने में इंकलाब बहुत हैं ॥

नरेंन्द्र

डिजिटल क्रांति या क्षणिक सनसनी?

भारत की राजनीति में समय-समय पर ऐसे आंदोलन उभरते रहे हैं, जिन्होंने व्यवस्था के प्रति जनता की नाराज़गी को नई अभिव्यक्ति दी है। आज के डिजिटल युग में यह भूमिका सोशल मीडिया निभा रहा है, जहाँ कुछ ही दिनों में कोई विचार, अभियान या व्यक्ति लाखों लोगों तक पहुँच जाता है। हाल के दिनों में अभिजीत डिपके की 'कॉकरोच जनता पार्टी' भी इसी तरह की एक घटना बनकर सामने आई है। यह आंदोलन अपने अनोखे प्रतीकों, तीखे व्यंग्य, मीम्स और व्यवस्था विरोधी तेवरों के कारण युवाओं के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है।

यह आंदोलन एक महत्वपूर्ण तथ्य को सामने लाता है कि देश का एक बड़ा युवा वर्ग मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था से असंतुष्ट है। बेरोजगारी, महंगाई, अवसरों की कमी, प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताएँ और व्यवस्था के प्रति बढ़ता अविश्वास युवाओं के भीतर गहरी बेचैनी पैदा कर रहा है। 'कॉकरोच जनता पार्टी' इस बेचैनी को शब्द देती है। वह उन भावनाओं को अभिव्यक्त करती है जिन्हें बड़ी राजनीतिक पार्टियाँ अक्सर सुन नहीं पातीं या सुनना नहीं चाहतीं लेकिन किसी भी आंदोलन का मूल्यांकन केवल उसके संदेश से नहीं, बल्कि उसकी दिशा और संभावनाओं से भी किया जाता है। यहीं से 'कॉकरोच जनता पार्टी' को लेकर कई गंभीर प्रश्न खड़े होते हैं।

इस आंदोलन की सबसे बड़ी ताकत उसका व्यंग्य है। मीम्स, चुटकुले और तंज के माध्यम से यह व्यवस्था पर प्रहार करता है। इससे युवाओं का ध्यान आकर्षित होता है और वे अपनी हताशा को साझा कर पाते हैं। किंतु राजनीति केवल असंतोष व्यक्त करने का माध्यम नहीं है; राजनीति का उद्देश्य समाधान प्रस्तुत करना भी होता है। किसी देश को केवल व्यंग्य के सहारे नहीं चलाया जा सकता। एक समय के बाद यह सवाल पूछा ही जाता है कि रोजगार कैसे बढ़ेंगे, अर्थव्यवस्था को किस दिशा में ले जाया जाएगा, कर व्यवस्था में क्या सुधार होंगे, शिक्षा और स्वास्थ्य पर क्या दृष्टिकोण होगा तथा विदेश नीति को लेकर क्या सोच है। इन जटिल प्रश्नों पर आंदोलन की स्पष्टता अभी दिखाई नहीं देती।

वास्तव में अस्पष्टता किसी भी आंदोलन को प्रारंभिक लोकप्रियता दिला सकती है, क्योंकि बिना स्पष्ट विचारधारा के अलग-अलग सोच वाले लोग एक मंच पर बने रहते हैं। लेकिन जैसे ही ठोस नीतिगत रुख सामने आता है, मतभेद भी सामने आने लगते हैं। यही कारण है कि केवल प्रतीकों और नारों पर आधारित आंदोलन अक्सर दीर्घकालिक राजनीतिक विकल्प नहीं बन पाते।

एक और चिंता यह है कि लगातार व्यवस्था विरोधी व्यंग्य कहीं युवाओं को नकारात्मकता की ओर न धकेल दे। लोकतंत्र में सरकार की आलोचना आवश्यक है, किंतु लोकतंत्र केवल आलोचना से नहीं चलता। लोकतंत्र को ऐसे नागरिक भी चाहिए जो संस्थाओं में सुधार की संभावना पर विश्वास रखें। यदि न्यायपालिका, मीडिया, विश्वविद्यालय और चुनाव जैसी संस्थाएँ केवल उपहास का विषय बन जाएँ, तो लोगों का विश्वास धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है। तब सुधार की जगह निराशा हावी हो जाती है।

आंदोलन स्वयं को आम युवाओं की

आवाज़ बताता है, लेकिन इसके सामाजिक आधार पर भी प्रश्न उठते हैं। इसकी डिजिटल उपस्थिति देखने पर प्रतीत होता है कि इसे आगे बढ़ाने वाले अधिकांश लोग शहरी, शिक्षित, अंग्रेज़ी भाषी और लगातार इंटरनेट से जुड़े युवा हैं। भारत का विशाल ग्रामीण समाज, प्रवासी मजदूर, सीमित डिजिटल संसाधनों वाले युवा और वे वर्ग जो सोशल मीडिया की दुनिया से बाहर हैं, इस विमर्श में अपेक्षाकृत कम दिखाई देते हैं। यह अंतर महत्वपूर्ण है, क्योंकि इंटरनेट पर लोकप्रियता और वास्तविक जनाधार दो अलग-अलग चीजें हैं।

इसके अतिरिक्त यह आंदोलन काफी हद तक एक व्यक्ति केंद्रित दिखाई देता है। सार्वजनिक चर्चा का बड़ा हिस्सा आंदोलन की विचारधारा की बजाय उसके प्रमुख चेहरे अभिजीत डिपके के इर्द-गिर्द घूमता है। इतिहास बताता है कि जो आंदोलन किसी एक व्यक्ति के करिश्मे पर टिके होते हैं, वे उस व्यक्ति की लोकप्रियता कम होते ही कमजोर पड़ जाते हैं। स्थायी राजनीतिक संगठनों को मजबूत संरचना, प्रशिक्षित कार्यकर्ता, वैचारिक स्पष्टता और संगठनात्मक अनुशासन की आवश्यकता होती है। केवल आकर्षक नेतृत्व पर्याप्त नहीं होता।

सोशल मीडिया आधारित आंदोलनों के सामने एक और चुनौती होती है—भ्रम और अतिरंजना का खतरा। इंटरनेट का एल्गोरिद्म अक्सर नाराज़गी, उत्तेजना और टकराव को बढ़ावा देता है। यदि किसी आंदोलन के पास स्पष्ट सिद्धांत और आचार सीमाएँ न हों, तो वह अफवाहों, अतिवादी विचारों और असंगठित भीड़तंत्र का शिकार हो सकता है। दुनिया भर में ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहाँ डिजिटल आक्रोश ने वास्तविक राजनीतिक परिवर्तन की बजाय अराजकता को जन्म दिया।

कुछ राजनीतिक विश्लेषक यह तर्क भी देते हैं कि केवल मीम्स और व्यंग्य पर आधारित विरोध किसी सरकार के लिए उतना बड़ा खतरा नहीं होता, जितना एक संगठित और वैचारिक विपक्ष। सोशल मीडिया का शोर कई बार उस ऊर्जा को बिखेर देता है जो जमीन पर संगठित राजनीतिक चुनौती बन सकती थी। किसी भी सत्ता को वास्तविक चिंता उन आंदोलनों से होती है जो बूथ स्तर तक संगठन खड़ा करते हैं, वैकल्पिक नीतियाँ प्रस्तुत करते हैं और जनता के बीच लगातार काम करते हैं।

'कॉकरोच' प्रतीक भी अपने भीतर एक द्वंद्व समेटे हुए है। एक ओर कॉकरोच को विपरीत परिस्थितियों में जीवित रहने वाले जीव के रूप में देखा जाता है, जो संघर्ष और जिजीविषा का प्रतीक हो सकता है। दूसरी ओर उसकी छवि गंदगी और संक्रमण से भी जुड़ी हुई है। राजनीति में प्रतीक अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि एक बार वे जनता के मन में स्थापित हो जाएँ तो उनकी व्याख्या आंदोलन के नियंत्रण से बाहर चली जाती है।

इस आंदोलन के भीतर विशेषज्ञता और नीति निर्माण के प्रति एक प्रकार का अविश्वास भी दिखाई देता है। जटिल नीतिगत मुद्दों को कई बार 'एस्टैब्लिशमेंट' की चाल कहकर खारिज कर दिया जाता है। लेकिन किसी राष्ट्र का संचालन केवल भावनाओं से नहीं होता। अर्थव्यवस्था, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता, अनुभव और दीर्घकालिक योजना की आवश्यकता होती है। लोकतंत्र में जनभावना महत्वपूर्ण है, परंतु शासन केवल जनभावना के आधार पर नहीं चल सकता।

सबसे बड़ा भ्रम यह है कि सोशल मीडिया की लोकप्रियता को राजनीतिक शक्ति मान लिया जाए। लाइक्स, शेयर और व्यूज़ प्रभाव का संकेत अवश्य देते हैं, लेकिन वे स्थायी जनसमर्थन की गारंटी नहीं होते। इंटरनेट की दुनिया में लोकप्रियता जितनी तेजी से आती है, उतनी ही तेजी से समाप्त भी हो जाती है। अगला वायरल विषय आते ही लोग पुराने मुद्दों को भूल जाते हैं। इसके विपरीत वास्तविक राजनीतिक परिवर्तन के लिए वर्षों की मेहनत, संगठन निर्माण, जनसंपर्क और धैर्य की आवश्यकता होती है।

इसका अर्थ यह नहीं कि 'कॉकरोच पार्टी' महत्वहीन है। इसके उदय को केवल मजाक कहकर खारिज करना भी भूल होगी। इसने यह स्पष्ट संकेत दिया है कि देश का एक बड़ा युवा वर्ग स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहा है। वह व्यवस्था से प्रश्न पूछना चाहता है और पारंपरिक राजनीति के विकल्प तलाश रहा है। यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक संकेत है।

फिर भी प्रश्न बना रहता है कि क्या यह आंदोलन आक्रोश से आगे बढ़कर कोई रचनात्मक राजनीतिक दृष्टि विकसित कर पाएगा? क्या यह मीम्स से निकलकर नीतियों तक पहुँचेगा? क्या यह डिजिटल लोकप्रियता को जमीनी संगठन में बदल पाएगा? या फिर यह केवल एक सांस्कृतिक प्रतिक्रिया बनकर रह जाएगा, जो एक पीढ़ी की निराशा को अभिव्यक्त तो करती है, लेकिन परिवर्तन का माध्यम नहीं बन पाती?

संभव है कि आने वाले वर्षों में इसका उत्तर स्पष्ट हो जाए। फिलहाल इतना निश्चित है कि 'कॉकरोच जनता पार्टी' भारतीय युवाओं के भीतर उभर रहे असंतोष का प्रतीक बन चुकी है। लेकिन इतिहास यह भी बताता है कि असंतोष परिवर्तन की शुरुआत तो हो सकता है, परिवर्तन स्वयं नहीं। परिवर्तन तब होता है जब नाराज़गी विचार में बदलती है, विचार संगठन में और संगठन नीति में। जब तक यह यात्रा पूरी नहीं होती, तब तक कोई भी आंदोलन चाहे वह कितना ही वायरल क्यों न हो, वास्तविक राजनीतिक शक्ति नहीं बन सकता।

भारत का असली वित्त मंत्री, मॉनसून

दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के बावजूद भारत आज भी आसमान से बरसने वाली बूंदों पर काफी हद तक निर्भर है। जब मॉनसून मेहरबान होता है तो खेत लहलहाते हैं, बाजारों में रौनक लौट आती है, महंगाई नियंत्रण में रहती है और सरकार के आर्थिक अनुमान सटीक साबित होते हैं। लेकिन जब मॉनसून कमजोर पड़ता है, तब बड़े-बड़े अर्थशास्त्री और नीति निर्माता भी असहाय दिखाई देने लगते हैं।

भारत में एक पुरानी कहावत प्रचलित है— 'भारत का असली वित्त मंत्री कोई राजनेता नहीं, बल्कि मॉनसून है।' यह केवल एक कहावत नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक और सामाजिक संरचना की वास्तविकता है। दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के बावजूद भारत आज भी आसमान से बरसने वाली बूंदों पर काफी हद तक निर्भर है। जब मॉनसून मेहरबान होता है तो खेत लहलहाते हैं, बाजारों में रौनक लौट आती है, महंगाई नियंत्रण में रहती है और सरकार के आर्थिक अनुमान सटीक साबित होते हैं। लेकिन जब मॉनसून कमजोर पड़ता है, तब बड़े-बड़े अर्थशास्त्री और नीति निर्माता भी असहाय दिखाई देने लगते हैं।

भारतीय मौसम विभाग (IMD) के अनुसार इस वर्ष मॉनसून सामान्य से कम रहने की आशंका जताई गई है। अनुमान है कि वर्षा दीर्घकालिक औसत (LPA) के लगभग 90 से 92 प्रतिशत के बीच रह सकती है। यह स्थिति केवल किसानों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश की अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय है।

मॉनसून और अर्थव्यवस्था का गहरा रिश्ता

केंद्रीय वित्त मंत्री हर वर्ष बजट पेश करते हैं, करों की दरें निर्धारित करते हैं और विकास योजनाओं का खाका तैयार करते हैं। लेकिन इन योजनाओं की सफलता काफी हद तक जून से सितंबर के बीच होने वाली मॉनसूनी बारिश पर निर्भर करती है। भारत की 50 प्रतिशत से अधिक कृषि भूमि आज भी वर्षा आधारित खेती पर टिकी हुई है। देश की लगभग आधी आबादी कृषि और उससे जुड़े व्यवसायों पर निर्भर है।

अच्छा मॉनसून किसानों की आय बढ़ाता है। किसान जब समृद्ध होता है तो ग्रामीण बाजारों में ट्रैक्टर, मोटरसाइकिल, मोबाइल फोन, कपड़े, आभूषण और उपभोक्ता वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है। भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से घरेलू खपत

भारत का असली वित्त मंत्री, मॉनसून

दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के बावजूद भारत आज भी आसमान से बरसने वाली बूंदों पर काफी हद तक निर्भर है। जब मॉनसून मेहरबान होता है तो खेत लहलहाते हैं, बाजारों में रौनक लौट आती है, महंगाई नियंत्रण में रहती है और सरकार के आर्थिक अनुमान सटीक साबित होते हैं। लेकिन जब मॉनसून कमजोर पड़ता है, तब बड़े-बड़े अर्थशास्त्री और नीति निर्माता भी असहाय दिखाई देने लगते हैं।

भारत में एक पुरानी कहावत प्रचलित है— 'भारत का असली वित्त मंत्री कोई राजनेता नहीं, बल्कि मॉनसून है।' यह केवल एक कहावत नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक और सामाजिक संरचना की वास्तविकता है। दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के बावजूद भारत आज भी आसमान से बरसने वाली बूंदों पर काफी हद तक निर्भर है। जब मॉनसून मेहरबान होता है तो खेत लहलहाते हैं, बाजारों में रौनक लौट आती है, महंगाई नियंत्रण में रहती है और सरकार के आर्थिक अनुमान सटीक साबित होते हैं। लेकिन जब मॉनसून कमजोर पड़ता है, तब बड़े-बड़े अर्थशास्त्री और नीति निर्माता भी असहाय दिखाई देने लगते हैं।

भारतीय मौसम विभाग (IMD) के अनुसार इस वर्ष मॉनसून सामान्य से कम रहने की आशंका जताई गई है। अनुमान है कि वर्षा दीर्घकालिक औसत (LPA) के लगभग 90 से 92 प्रतिशत के बीच रह सकती है। यह स्थिति केवल किसानों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश की अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय है।

मॉनसून और अर्थव्यवस्था का गहरा रिश्ता

केंद्रीय वित्त मंत्री हर वर्ष बजट पेश करते हैं, करों की दरें निर्धारित करते हैं और विकास योजनाओं का खाका तैयार करते हैं। लेकिन इन योजनाओं की सफलता काफी हद तक जून से सितंबर के बीच होने वाली मॉनसूनी बारिश पर निर्भर करती है। भारत की 50 प्रतिशत से अधिक कृषि भूमि आज भी वर्षा आधारित खेती पर टिकी हुई है। देश की लगभग आधी आबादी कृषि और उससे जुड़े व्यवसायों पर निर्भर है।

अच्छा मॉनसून किसानों की आय बढ़ाता है। किसान जब समृद्ध होता है तो ग्रामीण बाजारों में ट्रैक्टर, मोटरसाइकिल, मोबाइल फोन, कपड़े, आभूषण और उपभोक्ता वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है। भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से घरेलू खपत

पर आधारित है और इस खपत का बड़ा हिस्सा ग्रामीण भारत से आता है। इसलिए जब गांवों में समृद्धि आती है तो उसका असर सीधे शेयर बाजारों और औद्योगिक उत्पादन पर दिखाई देता है। यही कारण है कि मॉनसून को भारत की क्रय शक्ति और आर्थिक गतिविधियों का वास्तविक संचालक माना जाता है।

जीडीपी और महंगाई का निर्धारक

मॉनसून का प्रभाव केवल कृषि तक सीमित नहीं रहता। यह सेवा क्षेत्र, विनिर्माण क्षेत्र और वित्तीय बाजारों को भी प्रभावित करता है। एक अच्छा मॉनसून कृषि विकास दर को 4 से 5 प्रतिशत तक पहुंचा सकता है। अनाज, दलहन, तिलहन और सब्जियों का पर्याप्त उत्पादन बाजार में आपूर्ति सुनिश्चित करता है, जिससे खाद्य महंगाई नियंत्रित रहती है। जब महंगाई कम होती है तो भारतीय रिजर्व बैंक ब्याज दरों में कटौती कर सकता है। इससे उद्योगों को सस्ता ऋण मिलता है और निवेश बढ़ता है। परिणामस्वरूप पूरी अर्थव्यवस्था को गति मिलती है।

इसके विपरीत खराब मॉनसून फसलों को नुकसान पहुंचाता है। किसानों की आय घटती है और उनकी खरीद क्षमता कमजोर हो जाती है। ग्रामीण मांग में गिरावट का असर एफएमसीजी, ऑटोमोबाइल और उपभोक्ता वस्तु उद्योगों पर पड़ता है। उत्पादन कम होता है और रोजगार पर दबाव बढ़ता है। विशेषज्ञों का मानना है कि मॉनसून में मात्र 10 प्रतिशत की कमी भी देश की जीडीपी वृद्धि दर को 0.5 से 1 प्रतिशत तक नीचे ला सकती है।

सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की धुरी

भारत में मॉनसून केवल आर्थिक घटना नहीं, बल्कि सांस्कृतिक जीवन का आधार भी है। सावन, तीज, रक्षाबंधन, ओणम और पोंगल जैसे अनेक पर्व कृषि चक्र से जुड़े हुए हैं। अच्छी वर्षा ग्रामीण समाज में उत्साह और सकारात्मकता लाती है। विवाह, सामाजिक आयोजन और स्थानीय व्यापार सक्रिय हो जाते हैं। वहीं सूखा और फसल नुकसान ग्रामीण समाज में निराशा, आर्थिक तनाव और सामाजिक अस्थिरता पैदा करते हैं। रोजगार की तलाश में बड़े पैमाने पर ग्रामीण आबादी का शहरों की ओर पलायन बढ़ जाता है, जिससे शहरी बुनियादी ढांचे पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। इस दृष्टि से मॉनसून भारत के सामाजिक संतुलन का भी एक महत्वपूर्ण आधार है।

पर्यावरण और जीवन का आधार

मॉनसून केवल खेतों को ही नहीं, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को जीवन देता है। भारत की अधिकांश नदियां, झीलें और बांध मॉनसूनी जल पर निर्भर हैं। इसी दौरान जलाशय भरते हैं, जो पूरे वर्ष पेयजल, सिंचाई और औद्योगिक जरूरतों को पूरा करते हैं।

मॉनसूनी वर्षा भूजल स्तर को पुनर्जीवित करती है। जलविद्युत परियोजनाओं को पर्याप्त पानी मिलता है, जिससे स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन बढ़ता है और कोयले पर निर्भरता घटती है। बारिश वातावरण में मौजूद धूल और प्रदूषक तत्वों को साफ कर हवा की गुणवत्ता में सुधार करती है। पश्चिमी घाट और पूर्वोत्तर भारत के जैव विविधता क्षेत्रों को नई ऊर्जा मिलती है। साथ ही समुद्री पारिस्थितिकी और मत्स्य उद्योग को भी इसका लाभ मिलता है।

बदलते दौर की चुनौती

आज भारत डिजिटल क्रांति, अंतरिक्ष विज्ञान और वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। लेकिन जलवायु परिवर्तन ने मॉनसून की प्रकृति को अधिक अनिश्चित बना दिया है। कहीं अत्यधिक वर्षा हो रही है तो कहीं लंबे सूखे की स्थिति बन रही है। इस चुनौती से निपटने के लिए भारत को सिंचाई प्रणालियों का आधुनिकीकरण करना होगा, वर्षा जल संचयन को व्यापक बनाना होगा और कम पानी में होने वाली फसलों को प्रोत्साहित करना होगा। कृषि को जलवायु-स्मार्ट बनाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

भारत की आर्थिक प्रगति चाहे जितनी आधुनिक क्यों न हो जाए, उसकी जड़ें आज भी मिट्टी और बारिश से जुड़ी हुई हैं। जब तक कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की यह निर्भरता बनी रहेगी, तब तक देश के आर्थिक विकास का रिमोट कंट्रोल काफी हद तक बादलों के हाथ में रहेगा। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत का सबसे प्रभावशाली और शक्तिशाली वित्त मंत्री आज भी मॉनसून ही है।

इतिहास से मिले सबक

पिछले दो दशकों का इतिहास बताता है कि मॉनसून और अर्थव्यवस्था का रिश्ता कितना गहरा है।

2009 : भीषण सूखे का वर्ष

2009 में देश ने पिछले कई दशकों का सबसे खराब मॉनसून देखा। वर्षा में लगभग 22 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। खाद्य महंगाई 20 प्रतिशत के करीब पहुंच गई। सरकार को चीनी और दालों का बड़े पैमाने पर आयात करना पड़ा, जिससे राजकोषीय दबाव बढ़ा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था कमजोर पड़ गई।

2014-15 : लगातार दो वर्ष सूखा

अल-नीनो प्रभाव के कारण भारत को लगातार दो वर्षों तक कमजोर मॉनसून का सामना करना पड़ा। देश के एक-तिहाई से अधिक जिलों को सूखाग्रस्त घोषित करना पड़ा। किसानों की आर्थिक स्थिति बिगड़ी, आत्महत्या के मामलों में वृद्धि हुई और ग्रामीण पलायन तेज हुआ। सरकार को मनरेगा जैसी योजनाओं पर अतिरिक्त खर्च करना पड़ा।

2016 : राहत और पुनरुत्थान

लगातार दो वर्षों की कठिनाइयों के बाद 2016 में सामान्य मॉनसून ने कृषि क्षेत्र में नई जान फूंक दी। कृषि विकास दर लगभग 5 प्रतिशत तक पहुंच गई और ग्रामीण बाजारों में फिर से रौनक लौट आई।

2019-20: संकट में सहारा

इन वर्षों में सामान्य से अधिक वर्षा हुई। विशेष रूप से 2020 में, जब कोविड-19 महामारी के कारण अधिकांश आर्थिक गतिविधियां ठप थीं, तब कृषि क्षेत्र ने सकारात्मक विकास दर बनाए रखी। बंपर उत्पादन ने देश को गहरे आर्थिक संकट से उबरने में मदद की।+

विज़न 2031

सर्वाधिक विकसित बस्तर संभाग

बेली ब्रिजः बस्तर के जंगलों को जोड़ती नई उम्मीद

डाक्टर पहुंच रहे हैं बस्तर के अंदरूनी क्षेत्रों तक। अब मिल रही है लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं

छत्तीसगढ़ का बस्तर संभाग लंबे समय तक अपनी प्राकृतिक संपदा, समृद्ध आदिवासी संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत के साथ-साथ नक्सलवाद की चुनौती के कारण भी चर्चा में रहा है। दशकों तक हिंसा और अविकास की समस्या ने इस क्षेत्र की प्रगति को प्रभावित किया। लेकिन आज बस्तर परिवर्तन के एक नए दौर से गुजर रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा सुरक्षा, विकास और जनकल्याण को साथ लेकर चलने की नीति से बस्तर को शांति, समृद्धि और आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ाया जा रहा है। इसी सोच का प्रतिबिंब है, 'विज़न 2031: सर्वाधिक विकसित बस्तर संभाग' जिसका उद्देश्य बस्तर को देश के अग्रणी विकास क्षेत्रों में स्थापित करना है।

बस्तर संभाग प्राकृतिक संसाधनों, खनिज संपदा, घने वनों और सांस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण है। यहाँ लौह अयस्क, वन उपज और पर्यटन की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं। लंबे समय तक नक्सली गतिविधियों के कारण निवेश, शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत सुविधाओं का विस्तार बाधित रहा, लेकिन अब स्थिति तेजी से बदल रही है। सरकार की सुरक्षा एवं विकास आधारित रणनीति ने बस्तर में विश्वास और स्थिरता का नया माहौल तैयार किया है।

नक्सलवाद के उन्मूलन के लिए राज्य सरकार और सुरक्षा बलों ने प्रभावी अभियान चलाए। इसके साथ ही केवल सुरक्षा उपायों पर निर्भर रहने के बजाय सरकार ने आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों के पुनर्वास और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने पर विशेष बल दिया है। विभिन्न पुनर्वास योजनाओं के माध्यम से आत्मसमर्पित नक्सलियों को आर्थिक सहायता, कौशल प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर और सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। यह पहल इस विचार पर आधारित है कि स्थायी शांति हथियारों से नहीं, बल्कि विकास, संवाद और अवसरों से स्थापित होती है।

बस्तर के विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकार

बस्तर में सड़क निर्माण के बाद बढ़ी कनेक्टिविटी

द्वारा दूरस्थ क्षेत्रों में विद्यालयों, छात्रावासों और आवासीय शिक्षा संस्थानों का विस्तार किया गया है। आदिवासी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त संस्थान स्थापित किए जा रहे हैं। डिजिटल शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रम युवाओं को नई संभावनाओं से जोड़ रहे हैं। शिक्षा के माध्यम से बस्तर की नई पीढ़ी आत्मविश्वास के साथ राष्ट्रीय विकास की धारा में भागीदारी कर रही है।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सुधार देखने को मिल रहा है। दूरस्थ गाँवों तक स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचाने के लिए मोबाइल मेडिकल यूनिट, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का सुदृढ़ीकरण तथा मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रमों का विस्तार किया जा रहा है। बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ क्षेत्र के मानव संसाधन विकास की आधारशिला बन रही हैं।

आर्थिक विकास को गति देने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार ने बस्तर में औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहित करने की दिशा में नई पहल की है। उद्योगों की स्थापना के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा रहा है ताकि स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर मिल सकें। खनिज आधारित उद्योगों, खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों, वन उत्पाद आधारित उद्योगों तथा लघु एवं मध्यम उद्यमों को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं। इससे स्थानीय संसाधनों का मूल्य संवर्धन होगा और क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा मिलेगी।

सरकार की नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि औद्योगिक विकास के लाभ स्थानीय समुदायों तक पहुँचें। इसलिए कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षित किया जा रहा है। इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और युवाओं का पलायन कम होगा। उद्योगों और स्थानीय समाज के बीच समन्वय स्थापित कर समावेशी विकास की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

बस्तर में सड़क, पुल, बिजली और डिजिटल कनेक्टिविटी के विस्तार पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। जिन क्षेत्रों तक पहले पहुँचना कठिन था, वहाँ अब सड़क नेटवर्क का तेजी से विस्तार हो रहा है। बेहतर संपर्क व्यवस्था से शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और प्रशासनिक सेवाओं की पहुँच आसान हुई है। इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं के प्रसार से ग्रामीण क्षेत्रों में भी नई संभावनाएँ विकसित हो रही हैं।

पर्यटन क्षेत्र बस्तर के विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। चित्रकोट जलप्रपात, तीरथगढ़ जलप्रपात, कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान तथा बस्तर दशहरा जैसी सांस्कृतिक परंपराएँ विश्वस्तरीय आकर्षण रखती हैं। सरकार पर्यटन अवसंरचना को विकसित कर स्थानीय लोगों को पर्यटन आधारित रोजगार से जोड़ने का प्रयास कर रही है। इससे क्षेत्र की आय बढ़ने के साथ-साथ बस्तर की सांस्कृतिक पहचान भी वैश्विक स्तर पर स्थापित होगी।

विकास की इस प्रक्रिया में पर्यावरण संरक्षण और आदिवासी संस्कृति के संवर्धन को भी समान महत्व दिया जा रहा है। बस्तर की पहचान उसके जंगलों और जनजातीय परंपराओं से जुड़ी हुई है। इसलिए विकास योजनाओं में सतत विकास की अवधारणा को अपनाते हुए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर बल दिया जा रहा है।

'विज़न 2031: सर्वाधिक विकसित बस्तर संभाग' केवल आर्थिक प्रगति का लक्ष्य नहीं है, बल्कि शांति, सुरक्षा, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास का व्यापक संकल्प है। नक्सलवाद के प्रभाव को समाप्त करने, आत्मसमर्पित नक्सलियों को मुख्यधारा से जोड़ने, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार करने तथा उद्योगों और पर्यटन को बढ़ावा देने की छत्तीसगढ़ सरकार की पहले बस्तर के भविष्य को नई दिशा दे रही हैं। यदि यही गति और प्रतिबद्धता बनी रही, तो वर्ष 2031 तक बस्तर न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि पूरे भारत के लिए विकास, शांति और जनभागीदारी का एक आदर्श मॉडल बनकर उभरेगा।

पहुंचविहीन गांवों में पहली बार पहुंचा प्रशासन, खुशी से झूमे ग्रामीण

आत्मसमर्पित नक्सलियों के पुनर्वास के साथ ही रोजगार से जोड़ने प्रशिक्षण

बैगा बस्तियों से उठता सवाल

'हमारा हक कब मिलेगा?'

देश जब विकास, डिजिटल इंडिया, अमृतकाल और विश्वगुरु बनने की बात करता है, तब छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले के जंगलों में बसे बैगा आदिवासियों की जिंदगी एक असहज प्रश्न बनकर सामने खड़ी हो जाती है—क्या आज़ादी और संविधान का उजाला सचमुच यहां तक पहुंचा है?

यह केवल किसी एक गांव की कहानी नहीं है। यह उस व्यवस्था का आईना है, जहां योजनाओं के ढेर हैं, बजट की घोषणाएं हैं, फाइलों में दर्ज उपलब्धियां हैं, लेकिन धरातल पर एक पूरा समाज आज भी मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहा है।

जंगलों के बीच बसे इन गांवों में गरीबी सिर्फ आर्थिक स्थिति नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही नियति बन गई है। कई परिवारों के लिए दो वक्त की रोटी, बच्चों की पढ़ाई और बीमार पड़ने पर इलाज आज भी किसी सपने से कम नहीं है। विकास की सड़कें यहां पहुंचने से पहले ही कहीं खो जाती हैं।

सबसे बड़ा सवाल शिक्षा का है। जिन बच्चों के हाथों में किताबें होनी चाहिए थीं, उनके हाथों में आज भी मजदूरी और जिम्मेदारियों का बोझ दिखाई देता है। स्कूल भवन हैं, योजनाएं हैं, लेकिन शिक्षा का वास्तविक प्रकाश अभी भी इन बस्तियों तक पूरी तरह नहीं पहुंच पाया है। जब कोई बच्चा बीच में पढ़ाई छोड़ देता है, तो केवल एक छात्र नहीं छूटता, बल्कि उसके साथ एक पूरा भविष्य अंधेरे में चला जाता है।

स्वास्थ्य सुविधाओं की हालत भी कम चिंताजनक नहीं है। गर्भवती महिलाओं को कई किलोमीटर पैदल चलकर स्वास्थ्य केंद्र तक पहुंचना पड़ता है। गंभीर बीमारी का मतलब अक्सर शहर की दूरी और गरीबी की मजबूरी के बीच जीवन-मृत्यु का संघर्ष होता है। सरकारी आंकड़े भले उपलब्धियों की कहानी कहें, लेकिन जमीनी सच्चाई अभी भी सवालों से भरी है।

वन अधिकार कानून आदिवासियों को सम्मान और सुरक्षा देने के लिए बनाया गया था, लेकिन बड़ी संख्या में परिवार आज भी अपने अधिकारों की प्रतीक्षा में हैं। जिन जंगलों को उन्होंने पीढ़ियों तक बचाया, उन्हीं जंगलों पर अपने हक के लिए उन्हें दस्तावेज और दफ्तरों की लंबी लड़ाई लड़नी पड़ रही है।

सबसे दुखद पहलू यह है कि समस्याओं की जानकारी शासन और प्रशासन दोनों को है। अधिकारी आते हैं, बैठकें होती हैं, सर्वे होते हैं, रिपोर्टें बनती हैं, लेकिन तस्वीर बहुत धीमी गति से बदलती है। सवाल यह नहीं कि योजनाएं क्यों नहीं बन रहीं, सवाल यह है कि योजनाओं का लाभ उन लोगों तक क्यों नहीं पहुंच रहा जिनके लिए वे बनाई गई हैं।

कबीरधाम के बैगा गांव आज हमसे जवाब मांग रहे हैं। वे पूछ रहे हैं कि विकास की परिभाषा में उनका स्थान कहां है? क्या गणतंत्र केवल शहरों की चमक तक सीमित रहेगा या जंगलों की इन बस्तियों तक भी पहुंचेगा?

जब तक किसी आदिवासी बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिलेगी, जब तक किसी महिला को इलाज के लिए घंटों पैदल नहीं चलना पड़ेगा, जब तक जंगलों के असली संरक्षकों को उनके अधिकार नहीं मिलेंगे, तब तक विकास के दावे अधूरे रहेंगे।

कबीरधाम के जंगलों से उठती यह आवाज केवल बैगा समाज की नहीं है। यह लोकतंत्र की उस परीक्षा की आवाज है जिसमें सरकार, प्रशासन और समाज—तीनों को अपनी भूमिका निभानी होगी।

क्योंकि प्रश्न आज भी वहीं खड़ा है—
कब सुधरेगी दशा और दिशा?

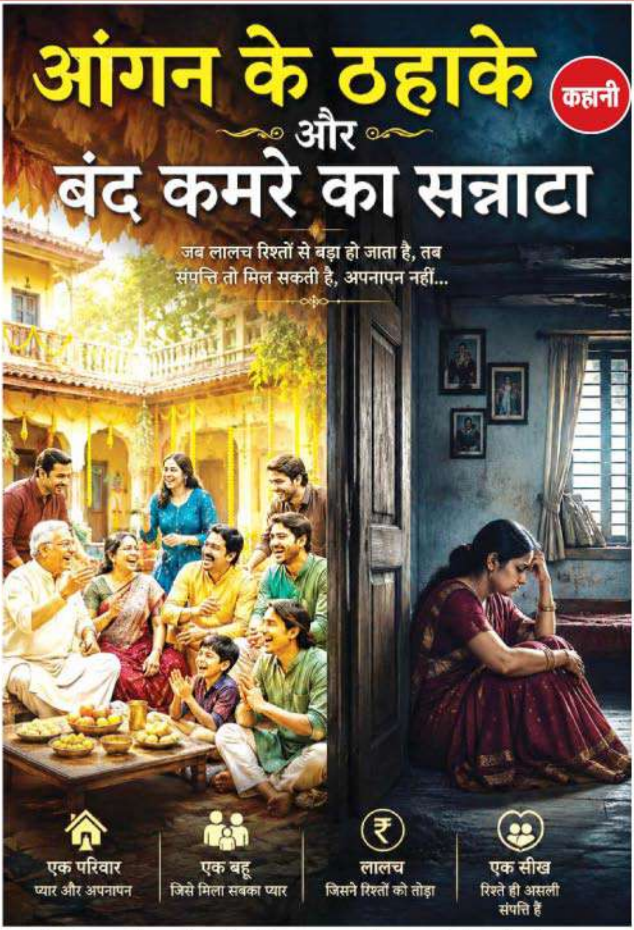

गांव के उस बड़े से घर में उस दिन खूब रौनक थी। ढोलक नहीं बज रही थी, लेकिन हंसी-ठहाकों की आवाजें आंगन में गूंज रही थीं। बरामदे में बच्चे खेल रहे थे, रसोई में पकवान बन रहे थे और वर्षों बाद पूरा परिवार एक साथ बैठा था। मगर घर के एक कमरे का दरवाजा बंद था। उस कमरे में बैठी थी वही बहू, जो कभी इस घर की सबसे चहेती सदस्य थी।

गांव सोनपुर में रामप्रसाद तिवारी का बड़ा सम्मान था। सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त रामप्रसाद के पास पुश्तैनी जमीन-जायदाद भी थी और उससे कहीं अधिक कीमती था उनका भरा-पूरा परिवार।

बड़ा बेटा महेश, बहू सुशीला,, बेटी सरोज और दामाद गिरधारी—सब मिलकर त्योहारों और पारिवारिक अवसरों पर घर को जीवंत कर देते थे।

जब छोटे बेटे राकेश की शादी कविता से हुई, तो मानो घर में नई बहार आ गई। गोरी, सुशील और पढ़ी-लिखी कविता को देखकर रामप्रसाद की पत्नी शारदा देवी की आंखों में चमक आ गई थी।

'अब घर पूरा हो गया,' शारदा देवी अक्सर कहा करती थीं।

लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था।

शादी के दो महीने बाद ही शारदा देवी की तबीयत बिगड़ी और देखते ही देखते वह संसार छोड़ गईं।

घर पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

गांव वालों की जुबान पर भी दुख कम और अंधविश्वास ज्यादा था।

'नई बहू के पांव भारी पड़ गए।'

'आते ही घर की लक्ष्मी चली गई।'

ऐसी फुसफुसाहटें कविता के कानों तक भी पहुंचती थीं।

मगर रामप्रसाद ने एक दिन पूरे गांव के सामने कहा था—

'मेरी पत्नी की मौत बीमारी से हुई है, किसी की किस्मत से नहीं। मेरी बहू इस घर की बेटी है।'

उस दिन कविता रो पड़ी थी।

उसे लगा था कि यह परिवार उसके लिए ढाल बनकर खड़ा है।

और सच भी यही था।

रामप्रसाद ने उसे बेटी से बढ़कर मान दिया। राकेश उसकी हर बात का ध्यान रखता था।

लेकिन शायद इंसान की सबसे कठिन परीक्षा दुख में नहीं, बल्कि अत्यधिक सुख में होती है।

समय बीता।

धीरे-धीरे कविता के व्यवहार में बदलाव आने लगा।

पहले उसने जेठानी सुशीला की छोटी-छोटी बातों पर टोका-टाकी शुरू की।

फिर जेठ महेश की बातों में उसे दखलअंदाजी नजर आने लगी।

सरोज जब मायके आती, तो कविता का चेहरा उतर जाता।

धीरे-धीरे रिश्तों की डोर ढीली पड़ने लगी।

लोग घर आने से बचने लगे।

रामप्रसाद समझाते।

राकेश समझाता।

लेकिन कविता को लगता कि सब लोग उसके खिलाफ हैं।

इसी बीच राकेश का तबादला रायगढ़ हो गया।

अब वह दो-तीन महीने में एक बार ही गांव आ पाता था।

कविता और उसका बेटा यश गांव में रामप्रसाद के साथ रहते थे।

यश बड़ा हो रहा था।

और उसी के साथ कविता के मन में एक नया सपना भी।

वह चाहती थी कि रामप्रसाद की सारी जमीन-जायदाद केवल यश के नाम हो जाए।

महेश और उसके बच्चों को कुछ न मिले।

सरोज का भी कोई हिस्सा न हो।

एक दिन उसने यह बात राकेश से कही।

राकेश चौंक गया।

'पगला गई हो क्या? बाबूजी की संपत्ति पर सबका अधिकार है।'

कविता को यह जवाब अच्छा नहीं लगा।

उस दिन के बाद पति-पत्नी के बीच दूरी बढ़ती चली गई।

जब लालच मन में घर बना लेता है, तो उसे हर अपना दुश्मन नजर आने लगता है।

कविता के साथ भी यही हुआ।

उसने राकेश पर आरोप लगाने शुरू कर दिए।

कभी कहती, 'तुम्हें अपने भाई की ज्यादा चिंता है।'

कभी कहती, 'तुम मुझे और मेरे बेटे को सड़क पर छोड़ दोगे।'

फिर आरोप और गंभीर होते गए।

उसने गांव में राकेश के चरित्र पर भी सवाल उठाने शुरू कर दिए।

राकेश के लिए यह किसी वज्रपात से कम नहीं था।

जिस पत्नी के लिए उसने दुनिया से लड़ाई लड़ी थी, वही उसकी इज्जत को नीलाम कर रही थी।

उस साल जून की तपती गर्मी में महेश और सुशीला गांव आए।

उनके पहुंचते ही घर में फिर विवाद शुरू हो गया।

कविता ने रसोई की चाबी तक देने से मना कर दिया।

महेश और सुशीला ने पड़ोसी हरिनारायण काका के घर खाना खाया।

गांव वाले हैरान थे।

जिस घर में कभी मेहमानों के लिए चूल्हा दिनभर जलता था, वहां अपने ही लोगों को पड़ोस में खाना पड़ रहा था।

अगले दिन राकेश भी पहुंच गया।

और उसी दिन कविता ने पुलिस बुला ली।

घरेलू हिंसा के आरोप लगाए गए।

गांव में सनसनी फैल गई।

शाम को पंचायत बैठी।

बरगद के नीचे गांव के बुजुर्ग, पुलिस, दोनों पक्ष और दर्जनों ग्रामीण मौजूद थे।

रामप्रसाद की आंखों में आंसू थे।

उन्होंने कांपती आवाज में कहा—

'मैंने इसे बेटी समझकर रखा। अगर मेरी कोई गलती हो तो बताओ।'

महेश चुप था।

राकेश सिर झुकाए बैठा था।

फिर हरिनारायण काका खड़े हुए।

उन्होंने एक वाक्य कहा—

'जिस घर में बहू के लिए पूरा परिवार लड़ गया था, आज वही बहू परिवार से लड़ रही है।'

सन्नाटा छा गया।

धीरे-धीरे सच सामने आने लगा।

गांव वालों ने वर्षों से देखी घटनाएं बताईं।

पुलिस ने दोनों पक्षों की बातें सुनीं।

पंचायत को समझते देर नहीं लगी कि यह मामला अत्याचार का नहीं, संपत्ति के लालच का था।

उस दिन के बाद बहुत कुछ बदल गया।

रिश्तों की गांठें धीरे-धीरे खुलने लगीं।

महेश फिर आने लगा।

सरोज बच्चों के साथ मायके आने लगी।

गिरधारी और गांव के लोग फिर रामप्रसाद के आंगन में बैठने लगे।

आज वही आंगन लोगों से भरा हुआ था।

महेश कोई पुराना किस्सा सुना रहा था।

सरोज हंसते-हंसते दोहरी हुई जा रही थी।

बच्चे आम के पेड़ के नीचे दौड़ रहे थे।

रामप्रसाद की आंखों में वर्षों बाद संतोष था।

ठहाकों की आवाज पूरे घर में गूंज रही थी।

लेकिन उसी घर के एक कमरे में कविता अकेली बैठी थी।

उसने खिड़की से बाहर देखा।

वह परिवार, जिसे उसने तोड़ना चाहा था, फिर से जुड़ गया था।

और वह, जो सब कुछ अपने नाम करना चाहती थी, आज किसी के दिल में जगह नहीं बना पाई थी।

उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

उसे पहली बार महसूस हुआ कि उसने जमीन के टुकड़ों के लिए रिश्तों का आसमान खो दिया है।

बाहर आंगन में हंसी थी।

भीतर कमरे में सन्नाटा।

और उस सन्नाटे में एक कड़वा सच बार-बार गूंज रहा था—

'घर की सबसे बड़ी संपत्ति जमीन नहीं, अपने लोग होते हैं।

जिस दिन यह बात समझ में आती है, कई बार तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।'

आपकी पात्रता दुख और सुख का निर्धारण करती है

डॉ नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने दुखों का कारण बाहर खोजता है। कभी वह परिवार को दोष देता है, कभी समाज को, कभी सरकार को, कभी भाग्य को और कभी ईश्वर को। उसके पास शिकायतों की एक लंबी सूची होती है। लेकिन जीवन का एक गहरा सत्य यह है कि संसार में एक जैसी परिस्थितियों में रहने वाले सभी लोग एक जैसे दुखी नहीं होते। किसी के लिए कठिनाई अवसर बन जाती है और किसी के लिए अवसर भी संकट में बदल जाता है।

'मेरा अयोग्य होना ही मेरे दुखों का कारण है।'

पहली बार सुनने पर यह वाक्य कठोर प्रतीत होता है। ऐसा लगता है मानो कोई व्यक्ति अपने सारे दु:खों का दोष स्वयं पर मढ़ रहा हो। लेकिन यदि थोड़ा ठहरकर इस वाक्य पर विचार किया जाए तो यह आत्मग्लानि का नहीं, बल्कि आत्मजागरण का सूत्र बन जाता है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने दुखों का कारण बाहर खोजता है। कभी वह परिवार को दोष देता है, कभी समाज को, कभी सरकार को, कभी भाग्य को और कभी ईश्वर को। उसके पास शिकायतों की एक लंबी सूची होती है। लेकिन जीवन का एक गहरा सत्य यह है कि संसार में एक जैसी परिस्थितियों में रहने वाले सभी लोग एक जैसे दुखी नहीं होते। किसी के लिए कठिनाई अवसर बन जाती है और किसी के लिए अवसर भी संकट में बदल जाता है। प्रश्न यह है कि ऐसा क्यों होता है? उत्तर सरल है—क्योंकि जीवन में दुख का कारण केवल परिस्थिति नहीं होती, बल्कि उस परिस्थिति का सामना करने की हमारी योग्यता भी होती है।

नदी और गिलास का अंतर

एक गुरु अपने शिष्यों को नदी किनारे ले गए। उन्होंने एक छोटा पत्थर उठाया और उसे पानी से भरे गिलास में डाल दिया। पानी बाहर छलक पड़ा। फिर उन्होंने उतना ही बड़ा पत्थर नदी में फेंका। कुछ क्षण के लिए लहरें उठीं और फिर नदी शांत हो गई। गुरु ने पूछा—'पत्थर दोनों जगह समान था, फिर परिणाम अलग क्यों हुआ?' शिष्य बोले—'क्योंकि गिलास छोटा था और नदी विशाल।' गुरु मुस्कुराए और बोले— 'जीवन की समस्याएँ पत्थर हैं। तुम्हारी चेतना पात्र है।' समस्या का आकार हमेशा निर्णायक नहीं होता। कई बार हमारी क्षमता का आकार निर्णायक होता है। जिस बात से कोई व्यक्ति टूट जाता है, उसी बात को दूसरा व्यक्ति सहजता से स्वीकार कर लेता है। कारण यह नहीं कि समस्याएँ अलग थीं, बल्कि पात्र अलग थे।

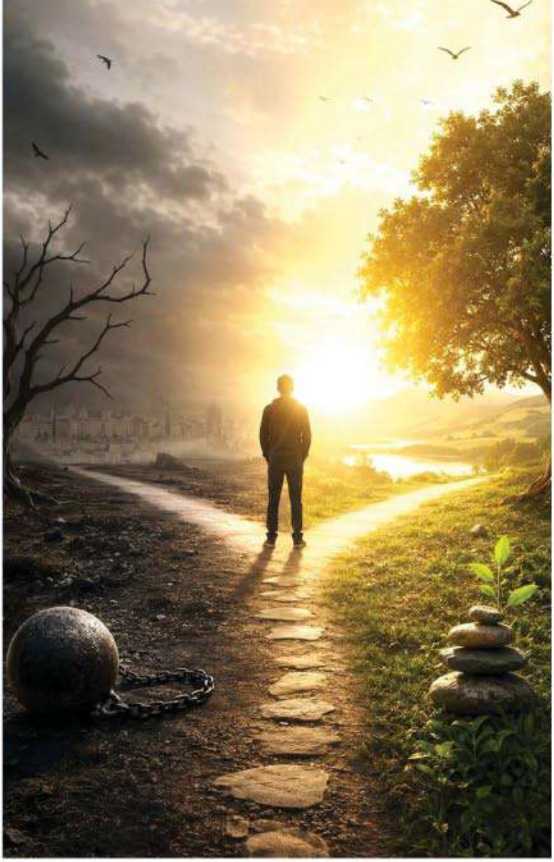

वातावरण हमें प्रभावित क्यों करता है?

अक्सर लोग कहते हैं— 'हम दुनिया को बदल नहीं सकते।' यह बात काफी हद तक सही है। हम मौसम को नियंत्रित नहीं कर सकते। हम महंगाई को नियंत्रित नहीं कर सकते। हम दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित नहीं कर सकते। हम राजनीति, अर्थव्यवस्था या समाज की हर घटना को नियंत्रित नहीं कर सकते। लेकिन एक दूसरा प्रश्न भी उतना ही महत्वपूर्ण है— यदि हम वातावरण को प्रभावित नहीं कर सकते, तो वातावरण हमें प्रभावित क्यों कर देता है? उत्तर यह है कि वातावरण बाहर नहीं रहता, वह भीतर प्रवेश कर जाता है। एक जहाज समुद्र में इसलिए नहीं डूबता क्योंकि उसके चारों ओर पानी है। वह तब डूबता है जब पानी उसके भीतर प्रवेश कर जाता है। इसी प्रकार संसार की घटनाएँ हमें तब तक नहीं तोड़ सकतीं जब तक हम उन्हें अपने भीतर स्थायी निवास न दे दें। अपमान बाहर होता है, पीड़ा भीतर जन्म लेती है। आलोचना बाहर होती है, आक्रोश भीतर पैदा होता है। घटना बाहर होती है, अर्थ भीतर बनता है। यही कारण है कि एक ही परिस्थिति अलग-अलग लोगों पर अलग प्रभाव डालती है।

दुख का गणित

मान लीजिए दो व्यक्तियों की नौकरी चली जाती है। पहला व्यक्ति सोचता है— 'सब खत्म हो गया।' वह अवसाद में चला जाता है। दूसरा व्यक्ति सोचता है— 'यह जीवन का नया अध्याय हो सकता है।' वह नया कौशल सीखना शुरू कर देता है। घटना दोनों के साथ समान हुई। लेकिन परिणाम अलग निकला। दुख घटना से कम और उसकी व्याख्या से अधिक पैदा होता है। मनोविज्ञान भी यही कहता है कि मनुष्य वास्तविकता से नहीं, बल्कि वास्तविकता के बारे में अपनी धारणाओं से प्रभावित होता है।

जिंदगी मुश्किल नहीं है, मगर आसान भी नहीं है

आधुनिक समय की सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम जीवन से सुविधा तो चाहते हैं, लेकिन विकास की कीमत नहीं चुकाना चाहते। हम सफलता चाहते हैं, लेकिन संघर्ष नहीं। सम्मान चाहते हैं, लेकिन पात्रता नहीं। फल चाहते हैं, लेकिन साधना नहीं। यहीं से निराशा जन्म लेती है। सत्य यह है कि जीवन न तो कठिन है और न ही सरल। जीवन निष्पक्ष है। प्रकृति किसी के साथ पक्षपात नहीं करती। बीज बोए बिना खेत फसल नहीं देता। अध्ययन किए बिना परीक्षा में सफलता नहीं मिलती। व्यायाम किए बिना शरीर स्वस्थ नहीं होता। और आत्मचिंतन किए बिना मन परिपक्व नहीं होता। जीवन का नियम है—योग्यता जितनी बढ़ेगी, संभावनाएँ उतनी बढ़ेंगी।

तितली का संघर्ष

एक व्यक्ति ने एक तितली को कोकून से बाहर निकलने का संघर्ष करते देखा। उसे दया आ गई। उसने कैंची से कोकून काट दिया ताकि तितली आसानी से बाहर निकल सके। तितली बाहर तो आ गई, लेकिन कभी उड़ नहीं सकी। क्योंकि जिस संघर्ष को वह समाप्त करना चाहता था, वही संघर्ष उसके पंखों में शक्ति भरने वाला था। आज हम भी जीवन से यही मांग करते हैं। हम चाहते हैं कि संघर्ष समाप्त हो जाए।

लेकिन शायद प्रकृति संघर्ष समाप्त नहीं करना चाहती। वह हमारी क्षमता बढ़ाना चाहती है। तभी तो भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन की परिस्थितियाँ नहीं बदलते। वे युद्ध नहीं रोकते। वे कौरवों को नहीं हटाते। वे परिस्थितियों का पुनर्निर्माण नहीं करते। वे केवल अर्जुन की चेतना का विस्तार करते हैं। जैसे ही अर्जुन की दृष्टि बदलती है, वही युद्ध जो उसे असहनीय लग रहा था, कर्तव्य का मार्ग बन जाता है। यह जीवन का सबसे बड़ा सूत्र है। परिस्थिति वही रहती है। दृष्टि बदल जाती है। और दृष्टि बदलते ही अनुभव बदल जाता है। अर्थात पात्र को बड़ा बनाइए क्योंकि जीवन में दो ही मार्ग होते हैं। पहला—परिस्थितियों को बदलने का प्रयास। दूसरा—स्वयं को बदलने का प्रयास। पहला मार्ग आवश्यक है, लेकिन हमेशा संभव नहीं होता। दूसरा मार्ग हमेशा संभव है। यदि संसार आपको बार-बार दुखी कर रहा है, तो संभव है कि समस्या संसार में नहीं, आपकी तैयारी में हो। यदि छोटी-छोटी घटनाएँ आपको विचलित कर देती हैं, तो शायद जीवन आपको यह संकेत दे रहा है कि अब पात्र को बड़ा करने का समय आ गया है। ज्ञान बढ़ाइए। धैर्य बढ़ाइए। स्वीकार्यता बढ़ाइए। चेतना का विस्तार कीजिए। क्योंकि अंततः जीवन का सबसे बड़ा सत्य यही है— **'दुखों को समाप्त करने का उपाय संसार को छोटा करना नहीं, स्वयं को बड़ा बनाना है।'** जिस दिन मनुष्य यह समझ लेता है, उसी दिन वह शिकायतों के संसार से निकलकर आत्मविकास की यात्रा पर चल पड़ता है।

हिन्द इंग्लिश मिडिल स्कूल पहुंचे लाईफ वर्सिटी के नरेंद्र पाण्डेय, हज कमेटी अध्यक्ष मिर्जा एजाज बेग से हुई मुलाकात

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य हज कमेटी के अध्यक्ष मिर्जा एजाज बेग से आज रायपुर स्थित हिन्द इंग्लिश मिडिल स्कूल में सौजन्य मुलाकात हुई। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व विभाग प्रमुख भास्कर कीन्हेकर तथा समाज भारती से जुड़े कपिल नारायण अग्रवाल भी उपस्थित रहे।

मुलाकात के दौरान शिक्षा, सामाजिक समरसता, युवा पीढ़ी के व्यक्तित्व विकास तथा समाज में सकारात्मक मूल्यों के प्रसार जैसे विषयों पर सार्थक चर्चा हुई। मिर्जा एजाज बेग ने बताया कि हिन्द इंग्लिश मिडिल स्कूल में वर्तमान में लगभग 460 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। विद्यालय में नर्सरी से लेकर 10वीं कक्षा तक की शिक्षा प्रदान की जाती है।

विद्यालय मुख्य रूप से आर्थिक रूप से कमजोर एवं निम्न आय वर्ग के परिवारों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संचालित किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि विद्यालय मुख्य रूप से आर्थिक रूप से कमजोर एवं निम्न आय वर्ग के परिवारों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संचालित किया जा रहा है। इसी कारण यहां की फीस भी अपेक्षाकृत कम रखी गई है। प्राथमिक कक्षाओं की वार्षिक फीस लगभग 4 से 5 हजार रुपये तथा 9वीं और 10वीं कक्षाओं की फीस लगभग 10 हजार रुपये है।

बैठक में लाईफ वर्सिटी द्वारा संचालित व्यक्तित्व विकास, सकारात्मक जीवन मूल्यों, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक चेतना से जुड़े अभियानों की जानकारी साझा की गई। मिर्जा एजाज बेग ने इन प्रयासों की सराहना करते हुए आगामी माह विद्यालय परिसर में लाईफ वर्सिटी के एक विशेष कार्यक्रम के आयोजन के लिए सहमति प्रदान की।

बैठक में इस बात पर भी सहमति बनी कि शिक्षा केवल परीक्षा और रोजगार तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों के विकास का माध्यम बने। उपस्थित सभी लोगों ने समाज में सकारात्मक संवाद और समरसता को बढ़ावा देने के लिए ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
नैनो उर्वरक
तरल
किसान मित्रों
के लिए है वरदान
सभी सहकारी समितियों में उर्वरकों का है पर्याप्त भण्डारण
आधी लागत
अच्छी पैदावार
NANO UREA PLUS
NANO COPPER
NANO ZINC
NANO DAP LIQUID
थरहा उपचार
5 मिली / 1 लीटर पानी
» नैनो डीएपी
बीज रोपाई से पूर्व थरहे को इस घोल में उपचारित करें
रोपाई के 30-35 दिन बाद
पहला छिड़काव
» नैनो डीएपी – 4 मिली/लीटर
» नैनो यूरिया प्लस – 4 मिली/लीटर
» नैनो जिंक – 1 मिली/लीटर
मिलाकर पत्तियों पर छिड़काव करें
रोपाई के 55-60 दिन बाद
दूसरा छिड़काव
» नैनो यूरिया प्लस
4 मिली/लीटर
घोल बनाकर पत्तियों पर समान रूप से छिड़काव करें
संवाद- 13844/244
ध्यान रखें
नैनो जिंक (30-35 दिन)
100 मिली / एकड़
नैनो कॉपर (30-35 दिन)
100 मिली / एकड़
छिड़काव हेतु 125 लीटर पानी प्रति एकड़ आवश्यक है
नैनो यूरिया की मात्रा 500 मिली प्रति एकड़ से अधिक न करें
छिड़काव सुबह या शाम के समय करें, तेज धूप में न करें
छत्तीसगढ़ जनसंपर्क
Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in